Drishti IAS

करेंट अफेयर्स उत्तराखंड

मई 2024

(संग्रह)

Drishti, 641, First Floor, Dr. Mukharjee Nagar, Delhi-110009
Inquiry (English): 8010440440, Inquiry (Hindi): 8750187501
Email: help@groupdrishti.in

अनुक्रम

उत्तराखंड **3**

- चारधाम यात्रा 2024 3
- भीमताल झील 4
- नक्षत्र सभा 5
- कुमाऊँ फैन पाम संरक्षणाधीन 6
- उत्तराखंड वनाग्नि: ग्लेशियरों के लिये संकट 7
- उत्तराखंड में वनाग्नि के कारण हवाई सेवा बाधित 9
- नेपाल भारतीय क्षेत्रों को दर्शाने वाला नया करेंसी नोट जारी करेगा 9
- क्षमता निर्माण कार्यक्रम 11
- उत्तराखंड का एबॉट माउंटेन 11
- उत्तरकाशी में भूकंप 12
- उत्तराखंड वनाग्नि पर भारतीय वायुसेना द्वारा नियंत्रण जारी 14
- वनाग्नि से उत्तराखंड के वन्य जीवन और पारिस्थितिक संतुलन को खतरा 14
- तड़ितझंझा 16
- भीमताल झील के जलस्तर में कमी 16
- चार धाम यात्रा 2024 17
- IIT-रुड़की के शोधकर्त्ताओं द्वारा प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली 18
- उत्तराखंड में बद्रीनाथ मंदिर भक्तों के लिये खुला 20
- चीन सीमा पर सड़कों पर पैसा खर्च करेगी सरकार 20
- स्थानांतरण के लिये सरकार को उत्तराखंड उच्च न्यायालय का निर्देश 21
- लुप्तप्राय हिमालयी जीवों पर वनाग्नि के कारण संकट 22
- शंभू नदी 23
- अपर्याप्त सिद्ध हुईं पाइन नीडल ऊर्जा परियोजनाएँ 24
- अभावपरक दृष्टिकोण: उत्तराखंड वनाग्नि 26
- चार धाम यात्रा 26
- प्लास्टिक मुक्त गंगा 27
- उत्तराखंड में अतिरिक्त वर्चुअल क्लासरूम 29
- गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान में हिम तेंदुए 29
- उत्तराखंड में चीनी बगुला 31
- उत्तराखंड के वन क्षेत्र में परियोजना पर रोक 31
- उत्तराखंड में बाहरी लोगों का सत्यापन अभियान 33
- उत्तराखंड में राजस्व पुलिस व्यवस्था समाप्त 33
- उत्तराखंड में UCC कार्यान्वयन 34
- चारधाम तीर्थयात्रा के लिये विनियामक प्रणाली 35
- राजाजी टाइगर रिज़र्व 37
- उत्तराखंड में भूकंप 37
- सरकार ने CAA के तहत नागरिकता देना शुरू किया 39
- उत्तराखंड की फूलों की घाटी 40
- उत्तराखंड में बागवानी की पैदावार में गिरावट 40
- उत्तराखंड में छात्रों के लिये द्विभाषीय पुस्तकें 41

उत्तराखंड

चारधाम यात्रा 2024

चर्चा में क्यों ?

यमुनोत्री मंदिर 10 मई को खुलेगा और 31 अक्तूबर 2024 को बंद होगा, जो यमुना नदी के स्रोत पर आशीर्वाद लेने वाले तीर्थयात्रियों का स्वागत करता है।

मुख्य बिंदु:

- यमुनोत्री मंदिर पवित्र **चारधाम यात्रा** का पहला पड़ाव है। यह उत्तराखंड के उत्तरकाशी ज़िले में गढ़वाल हिमालय में स्थित है।
  - प्रत्येक वर्ष, हज़ारों हिंदू इस तीर्थस्थल पर आशीर्वाद लेने के लिये **आध्यात्मिक यात्रा** पर जाते हैं।
- वर्ष 2024 में इस शुभ तिथि को **हिंदू पंचांग** के आधार पर चुना गया है, जो **अक्षय तृतीया** के साथ मेल खाता है। इस दिन का बहुत महत्त्व है

यमुना नदी

- **परिचय:**
  - यमुना नदी उत्तर भारत में गंगा की प्रमुख सहायक नदियों में से एक है।
  - यह विश्व के व्यापक जलोढ़ मैदानों में से एक **यमुना-गंगा मैदान** का एक अभिन्न भाग है।
- **स्रोत:** इसका स्रोत **निचली हिमालय पर्वतमाला** में **बंदरपूँछ शिखर** के दक्षिण-पश्चिमी किनारों पर **6,387 मीटर की ऊँचाई पर यमुनोत्री ग्लेशियर** में स्थित है।
- **बेसिन:** यह **उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा** और **दिल्ली** से प्रवाहित होते हुए उत्तर प्रदेश के **प्रयागराज में संगम (जहाँ कुंभ मेला आयोजित होता है) स्थल पर गंगा** में मिल जाती है।
- **महत्त्वपूर्ण बाँध:** लखवार-व्यासी बाँध (उत्तराखंड), ताजेवाला बैराज बाँध (हरियाणा) आदि।
- **महत्त्वपूर्ण सहायक नदियाँ:** चंबल, सिंध, बेतवा और केन।
- **यमुना नदी से संबंधित सरकारी पहल**
  - यमुना एक्शन
  - फरवरी 2025 तक यमुना को साफ करने के लिये दिल्ली सरकार की छह सूत्री कार्य योजना

नोट :

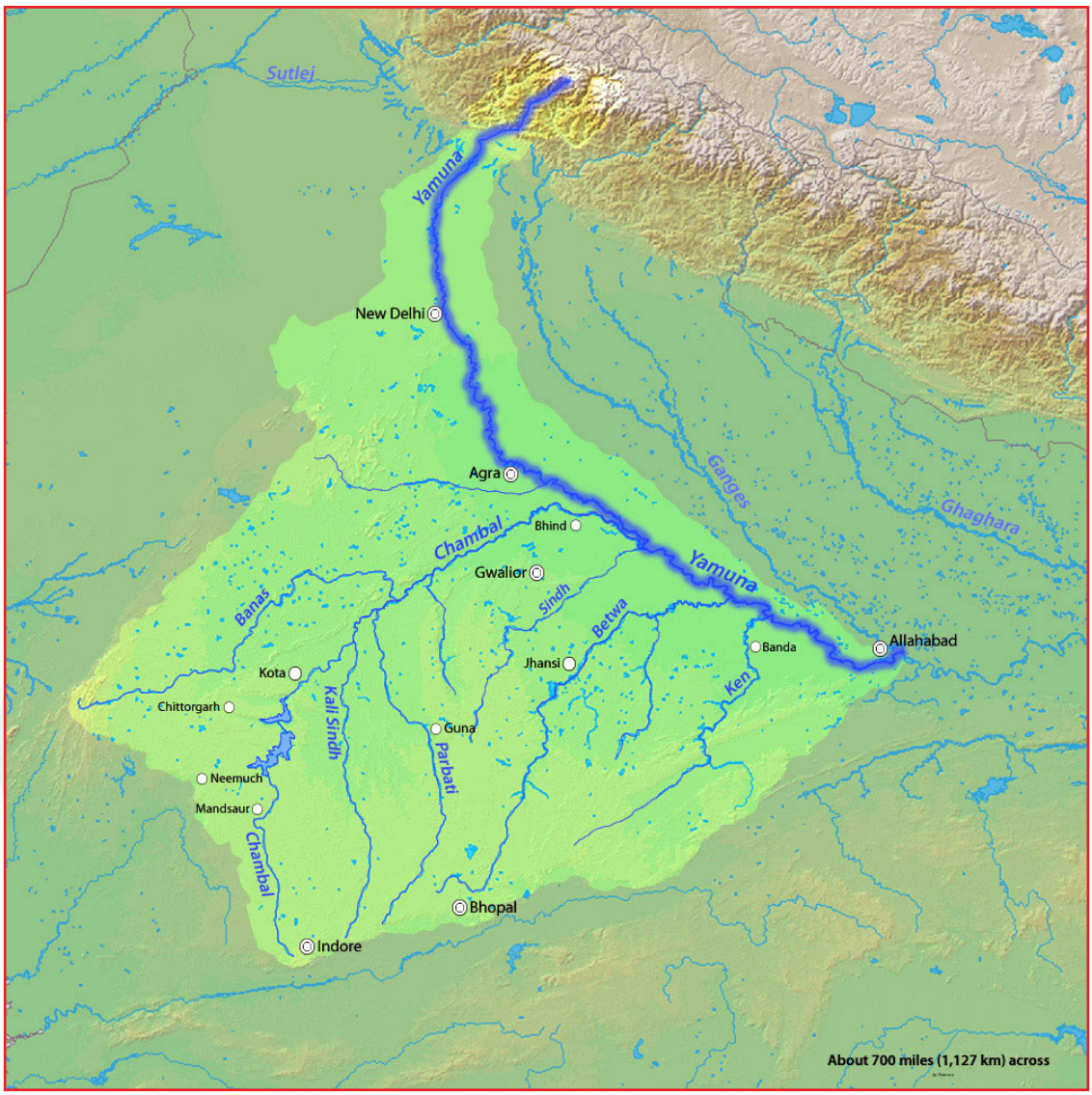

भीमताल झील

चर्चा में क्यों ?

नैनीताल ज़िला मुख्यालय के निकट वन में लगी भीषण वनाग्नि से निपटने के लिये राज्य सरकार ने भीमताल झील से जल लाने और प्रभावित वन क्षेत्रों पर छिड़काव करने के लिये **सेना के MI 17 हेलीकॉप्टरों** को तैनात किया।

मुख्य बिंदु:

- भीमताल झील उत्तराखंड राज्य में **नैनीताल ज़िले की सबसे बड़ी झील** है। यह **कुमाऊँ क्षेत्र की सबसे बड़ी झील** है, जिसे **"भारत का झील ज़िला"** कहा जाता है।
  - इसका नाम प्रसिद्ध महाकाव्य **महाभारत के दूसरे पांडव भीम** के नाम पर रखा गया है।
- यह एक **प्राकृतिक झील** है और इसकी उत्पत्ति का श्रेय **भू-पर्पटी के खिसकने के कारण उत्पन्न हुए कई भ्रंश** को दिया जाता है।

नोट :

- इस झील का निर्माण वर्ष 1883 में **ब्रिटिश काल के दौरान** हुआ था और इस पर **एक चिनाई वाला बाँध** बनाया गया है।
- झील के चारों ओर समृद्ध वनस्पति और जैव पारिस्थितिकी तंत्र हैं साथ ही झील के चारों ओर पहाड़ी ढलानों पर **देवदार एवं ओक** के घने वन हैं।
  - सर्दियों के महीनों में यह **कई प्रवासी पक्षियों का आवास** होता है।
  - क्षेत्र में पाई जाने वाली प्रसिद्ध प्रजातियों में **बुलबुल, वॉल क्रीपर, एमराल्ड डव, ब्लैक ईगल** और **टॉनी फिश आउल** शामिल हैं।
- **झील के केंद्र में एक द्वीप** है जिसे एक **काँच वाटिका** के साथ पर्यटकों के आकर्षण के रूप में विकसित किया गया है।

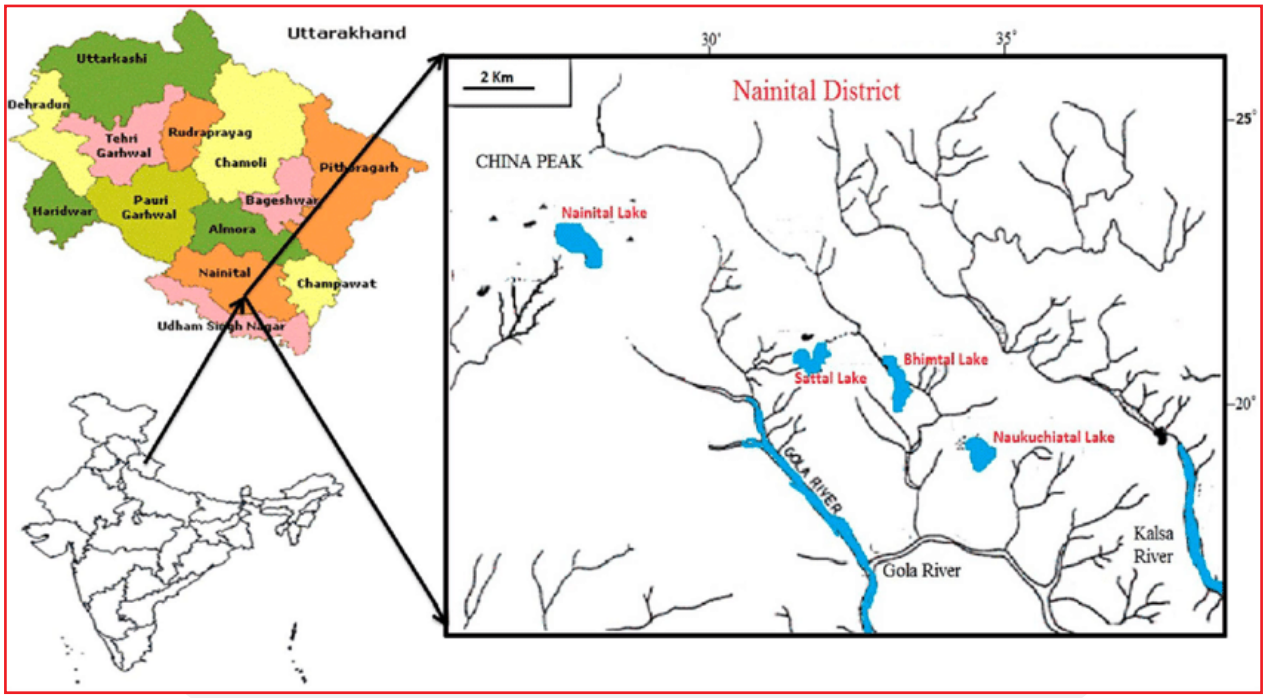

नक्षत्र सभा

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड पर्यटन विकास बोर्ड ने लोगों को व्यापक खगोल पर्यटन अनुभव प्रदान करने के लिये एक नई पहल, नक्षत्र सभा शुरू करने हेतु एक प्रमुख खगोल-पर्यटन कंपनी, **स्टारस्केप्स** के साथ समन्वय किया है।

मुख्य बिंदु:

- यह अभियान **कई प्रकार की गतिविधियों की पेशकश** करेगा, जिसमें तारों को देखना, विशेष सौर अवलोकन, एस्ट्रोफोटोग्राफी प्रतियोगिता, तारों के अवलोकन हेतु शिविर लगाना व अन्य शामिल हैं।
- इस पहल का उद्देश्य **खगोल विज्ञान के प्रति उत्साही लोगों और यात्रियों** को ब्रह्मांड के चमत्कारों को देखने के लिये एक साथ लाना है।
  - उत्तराखंड अपने समृद्ध वन क्षेत्र, प्रकृति-आधारित पर्यटन, प्रमुख शहरों तक सुविधाजनक पहुँच और होमस्टे सहित अच्छी तरह से स्थापित आतिथ्य क्षेत्र के साथ विश्व भर में खगोल पर्यटकों को आकर्षित करने के लिये उपयुक्त है।
- **मसूरी** में **जॉर्ज एवरेस्ट** को जून की शुरुआत से वर्ष 2025 के मध्य तक नक्षत्र सभा की मेज़बानी करने के लिये तैयार किया गया है, जिसमें पूरे उत्तराखंड में विभिन्न स्थानों पर कई आकर्षक कार्यक्रम पेश किये जाएंगे।

नोट :

- ये आयोजन खगोल विशेषज्ञों के नेतृत्व में सेमिनार और वेबिनार के साथ-साथ **उत्तरकाशी, पिथौरागढ़, नैनीताल** एवं **चमोली** जैसे ज़िलों में **बेहतर नाईट स्काई अवलोकन स्थलों** का पता लगाएंगे।

- उत्तराखंड में **नाईट स्काई के संरक्षण के लिये** प्रतिबद्ध समर्थकों का एक समुदाय बनाकर, नक्षत्र सभा अभियान का उद्देश्य नाईट स्काई का संरक्षण करते हुए पेशेवर प्रशिक्षण, कौशल विकास को बढ़ावा देना और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करना है।
  - यह वर्ष 2025 में पूरे क्षेत्र में नाईट स्काई को संरक्षित करने के लिये एक नीति स्थापित करने की योजना बना रहा है।

उत्तराखंड पर्यटन विकास बोर्ड

- यह उत्तराखंड राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये ज़िम्मेदार एक सरकारी निकाय है।
- इसकी **स्थापना वर्ष 1976 में** हुई थी और इसका **मुख्यालय देहरादून** में है।
- UTDB पर्यटन बुनियादी ढाँचे को **विकसित करने और बढ़ावा देने**, **निवेश को आकर्षित करने** एवं उत्तराखंड को एक पर्यटन स्थल के रूप में बाज़ार में लाने के लिये कार्य करता है।

कुमाऊँ फैन पाम संरक्षणाधीन

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड वन अनुसंधान विंग ने **पिथौरागढ़ की पातालथौड़ नर्सरी में इस देशी पौधे के 300 पौधे उगाकर** एक एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।

मुख्य बिंदु:

- यह पहल **कुमाऊँ पाम/ताड़ को पुनर्जीवित और संरक्षित** करने के प्रयास में शुरू की गई थी, जिसे **कुमाऊँ फैन पाम** के नाम से भी जाना जाता है।
- यह **शून्य से भी कम तापमान में जीवित रहने वाली एकमात्र ताड़ की प्रजाति है** और इसे **विश्व की सबसे कठोर ताड़ कहा जाता है।**
- वन अनुसंधान विंग के अनुसार, पौधों की प्रजातियों को **अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN)** और **उत्तराखंड जैवविविधता बोर्ड** दोनों द्वारा '**संकटग्रस्त**' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

कुमाऊँ फैन पाम

- ताड़ का पेड़ उत्तर-पश्चिमी भारत में **उत्तराखंड प्रांत के कुमाऊँ मंडल** और निकटवर्ती पश्चिमी नेपाल में पाया जाता है।

नोट :

- ताड़ **1,800-2,700 मीटर (5,900-8,900 फीट) की ऊँचाई पर उगता** है और यह अपने मूल स्थान में नियमित आधार पर बर्फ तथा ठंड प्राप्त करता है।
- इसका **वैज्ञानिक नाम ट्रेचीकार्पस टाकिल (Trachycarpus takil) है।**

अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ

- यह एक **सदस्यता संघ** है जो विशिष्ट रूप से **सरकार और नागरिक समाज दोनों संगठनों** से बना है।
- **वर्ष 1948 में बनाया गया,** यह प्राकृतिक जगत की स्थिति और इसकी सुरक्षा के लिये आवश्यक उपायों पर वैश्विक प्राधिकरण है।
- इसका मुख्यालय **स्विट्ज़रलैंड** में है।
- IUCN द्वारा जारी की जाने वाली **रेड लिस्ट विश्व की सबसे व्यापक** सूची है, जिसमें पादप और जंतु प्रजातियों की वैश्विक संरक्षण की स्थिति को दर्शाया जाता है।

उत्तराखंड वनाग्नि: ग्लेशियरों के लिये संकट

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड में **वनाग्नि** की घटना **के कारण क्षेत्र के वनों को भारी नुकसान** पहुँचा है। नवंबर 2023 से, वनाग्नि की 886 अलग-अलग घटनाओं में 1,107 हेक्टेयर वन क्षेत्र नष्ट हो गया है, जिससे **स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र पर गहरा प्रभाव** पड़ने की चिंता उत्पन्न हो गई है।

मुख्य बिंदु:

- **भारतीय वन सर्वेक्षण (Forest Survey of India- FSI)** ने मौजूदा संकट की गंभीरता पर ज़ोर देते हुए, उत्तराखंड में कई वनाग्नि-अलर्ट जारी किये हैं।
- **वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी** के एक पूर्व वैज्ञानिक ने विशेष रूप से गर्मियों के दौरान वनाग्नि के कारण वातावरण में **ब्लैक कार्बन** की बढ़ती सांद्रता पर प्रकाश डाला है, जो **ग्लेशियर के पिघलने** का प्रमुख कारण है और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के नाज़ुक संतुलन को बाधित करता है।
- **विश्व बैंक** द्वारा हाल ही में किये गए एक अध्ययन में ग्लेशियर पिघलने की गति बढ़ाने में ब्लैक कार्बन की भूमिका को रेखांकित किया गया है।
- रिपोर्ट के अनुसार, ब्लैक कार्बन के संचय से न केवल ग्लेशियर की सतहों का परावर्तन कम हो जाता है, जिससे सौर विकिरण का अवशोषण बढ़ जाता है, बल्कि हवा का तापमान भी बढ़ जाता है, जिससे ग्लेशियर के स्खलन की गति और तेज़ हो जाती है।
- **विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO)** ने **हिमालय** में ग्लेशियरों के तेज़ी से पिघलने और **ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड** जैसी प्राकृतिक आपदाओं के बढ़ते खतरों की चेतावनी दी है।
- उनके हालिया अध्ययन में ब्लैक कार्बन उत्सर्जन के प्रभावों को कम करने और हिमालय क्षेत्र के नाज़ुक पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिये ठोस प्रयासों की आवश्यकता बताई गई है।

वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी (Wadia Institute of Himalayan Geology- WIHG)

- वाडिया इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन जियोलॉजी **विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग का एक स्वायत्त अनुसंधान संस्थान** है।
- जून, 1968 में दिल्ली विश्वविद्यालय के वनस्पति विज्ञान विभाग के दो कक्ष में एक छोटे केंद्र के रूप में स्थापित इस संस्थान को अप्रैल, 1976 के दौरान देहरादून में स्थानांतरित कर दिया गया था।

नोट :

ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड (GLOF)

- यह एक प्रकार की विनाशकारी बाढ़ है जो तब होती है जब **हिमनद झील बाँध** असंतुलित हो जाता है, जिससे बहुत बड़ी मात्रा में जल प्रवाह होता है।
- इस प्रकार की बाढ़ आम तौर पर **ग्लेशियरों के तेज़ी से पिघलने** या भारी वर्षा या पिघले जल के प्रवाह के कारण झील में जल के अति-संचय के कारण होती है।
- फरवरी 2021 में, उत्तराखंड के **चमोली ज़िले में अचानक बाढ़ की घटना** हुई, जिसके बारे में **संदेह है कि यह GLOF के कारण हुई** थी।
- **कारण:**
  - ये बाढ़ कई कारकों से उत्पन्न हो सकती है, जिनमें **ग्लेशियर की मात्रा में परिवर्तन, झील के जल स्तर में परिवर्तन** और **भूकंप** शामिल हैं।
  - **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण** (National Disaster Management Authority- NDMA) के अनुसार, **हिंदूकुश हिमालय** के अधिकांश हिस्सों में होने वाले जलवायु परिवर्तन के कारण हिमनदों के स्खलन से कई नए हिमनद झीलों का निर्माण हुआ है, जो GLOF का प्रमुख कारण हैं।

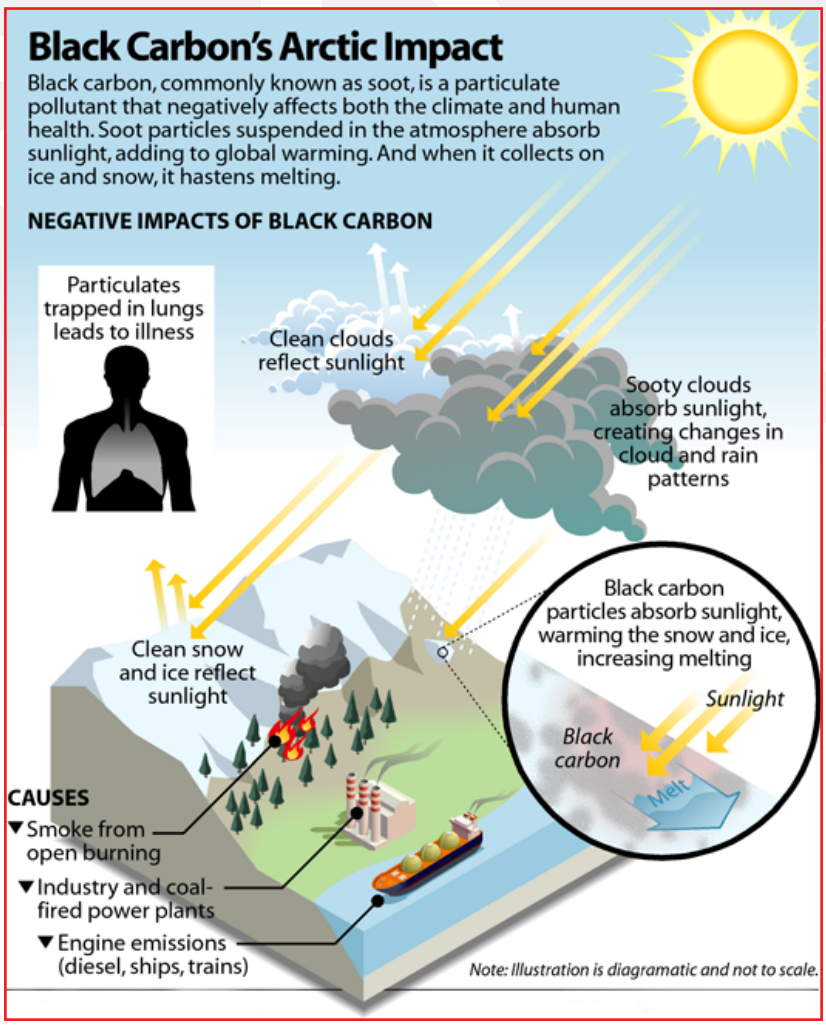

नोट :

उत्तराखंड में वनाग्नि के कारण हवाई सेवा बाधित

चर्चा में क्यों ?

वनाग्नि की आग के धुएँ के कारण नैनी-सैनी हवाईअड्डे पर दृश्यता कम होने के कारण सीमावर्ती ज़िले के पिथौरागढ़ और मुनस्यारी कस्बों के लिये हवाई सेवाएँ रोक दी गईं।

मुख्य बिंदु:

- हवाई अड्डे के आस-पास दृश्यता 1000 मीटर से कम थी, जबकि **हवाई यातायात को** सुरक्षित रूप से संचालित करने के लिये **न्यूनतम 5000 मीटर दृश्यता की आवश्यकता** होती है।
  - **सौर घाटी** के अलावा **चंपावत की क्वीराला घाटी** और **लोहाघाट, झूलाघाट** एवं **गौरीहाट** के वनों में भी आग फैल रही है।
  - ज़िले के विभिन्न स्थानों में सामुदायिक और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के स्वास्थ्य पेशेवरों के अनुसार, **साँस लेने में कठिनाई तथा आँखों में जलन की चिंताओं** के साथ **बड़ी संख्या में मरीज़ अस्पतालों में आ रहे** हैं।
- **नैनी-सैनी हवाई अड्डा** जिसे अन्यथा **पिथौरागढ़ हवाई पट्टी** भी कहा जाता है, पिथौरागढ़, उत्तराखंड में स्थित है। **हवाई पट्टी का वर्ष 1991 में** आधिकारिक उपयोग के लिये **निर्माण** कराया गया था और डोर्नियर **228 की फ्लाइंग मशीन के संचालन** के लिये तैयार की गई थी।

नेपाल भारतीय क्षेत्रों को दर्शाने वाला नया करेंसी नोट जारी करेगा

चर्चा में क्यों ?

नेपाल ने हाल ही में एक मानचित्र के साथ 100 रुपए के नए नोट छापने की घोषणा की है जिसमें **लिपुलेख, लिंपियाधुरा और** कालापानी के भारतीय क्षेत्र शामिल हैं।

- नेपाल सरकार ने मुद्रा नोट पर वर्तमान मानचित्र को अद्यतन संस्करण के साथ बदलने के लिये **नेपाल राष्ट्र बैंक** को अधिकृत किया है।

मुख्य बिंदु:

- लिपुलेख, कालापानी और लिंपियाधुरा को भारत ने पूर्व में **नवंबर 2019 के अपने नक्शे में शामिल** किया था।
  - **मई 2020 में** नेपाल द्वारा एक **राजनीतिक मानचित्र जारी** करने के बाद **नई दिल्ली और काठमांडू** के बीच तनाव उत्पन्न हो गया, जिसमें **समान क्षेत्र शामिल थे।**
  - राजनयिक संबंध तब और तनाव में आ गए जब नेपाल ने वर्ष 2020 में **लिपुलेख के माध्यम से कैलाश मानसरोवर को जोड़ने वाली सड़क के उद्घाटन पर आपत्ति जताते हुए** भारत को एक राजनयिक नोट सौंपा।
  - भारत के **विदेश मंत्रालय** ने नेपाल की आपत्ति का जवाब देते हुए कहा था कि **उत्तराखंड के पिथौरागढ़ ज़िले से गुज़रने वाली सड़क पूरी तरह से भारतीय क्षेत्र में आती है।**
- नेपाल ने सुगौली संधि- 1816 के आधार पर अपना दावा जताया है। संधि के अनुसार लिम्पियाधुरा, **कालापानी और लिपुलेख सहित काली (महाकाली) नदी के पूर्व के सभी क्षेत्र नेपाल के हैं।**
  - **ईस्ट इंडिया कंपनी और गुरु गजराज मिश्रा** के बीच 4 मार्च 1816 को हस्ताक्षरित **सुगौली संधि ने वर्ष 1814-16 के एंग्लो-नेपाली युद्ध के बाद** नेपाल की सीमा रेखा को रेखांकित किया।

नोट :

- हालाँकि भारत ने कहा है कि **भारत और नेपाल के बीच वर्ष 1950 की शांति एवं मित्रता की संधि ने सुगौली संधि को रद्द कर दिया।**
- नेपाल का तर्क है कि 1923 की नेपाल-ब्रिटेन मैत्री संधि जैसी संधियों ने ब्रिटिश शासन के युग के दौरान उसकी संप्रभुता की पुष्टि की।

भारत और नेपाल के बीच सीमा विवाद

- भारत और नेपाल के बीच **कालापानी - लिंपियाधुरा - लिपुलेख ट्राइजंक्शन तथा सुस्ता क्षेत्र (पश्चिम चंपारण ज़िला, बिहार)** पर सीमा विवाद है।
- **कालापानी क्षेत्र:**
  - कालापानी एक घाटी है जिसे भारत द्वारा उत्तराखंड के पिथोरागढ़ ज़िले के एक हिस्से के रूप में प्रशासित किया जाता है। यह कैलाश मानसरोवर मार्ग पर स्थित है।
    - कालापानी 20,000 फीट से अधिक की ऊँचाई पर स्थित है और उस क्षेत्र के लिये एक अवलोकन चौकी के रूप में कार्य करता है।
  - **कालापानी क्षेत्र** में काली नदी भारत और नेपाल के बीच सीमा का निर्धारण करती है।
  - **वर्ष 1816 में नेपाल साम्राज्य और ब्रिटिश भारत (एंग्लो-नेपाली युद्ध के बाद)** द्वारा हस्ताक्षरित सुगौली की संधि में काली नदी को भारत के साथ नेपाल की पश्चिमी सीमा के रूप में स्थित किया गया था।
  - **काली नदी के स्रोत** का पता लगाने में विसंगति के कारण भारत और नेपाल के बीच सीमा विवाद उत्पन्न हो गया तथा प्रत्येक देश ने अपने-अपने दावों का समर्थन करते हुए मानचित्र तैयार किये।

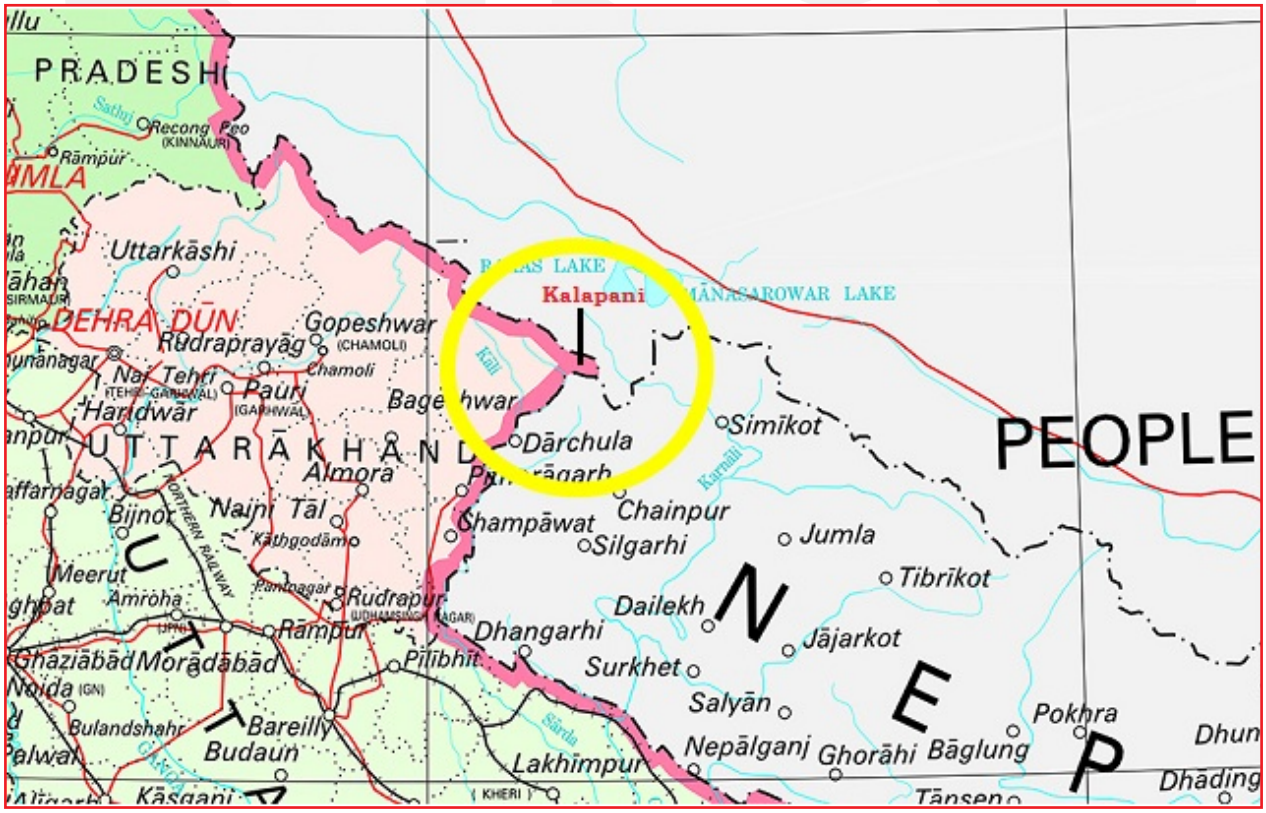

नोट :

क्षमता निर्माण कार्यक्रम

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **राष्ट्रीय सुशासन केंद्र (NCGG), मसूरी** में **तंज़ानिया गणराज्य के अधिकारियों के लिये सार्वजनिक कार्यों की परियोजना और जोखिम प्रबंधन पर दो सप्ताह का क्षमता निर्माण कार्यक्रम** शुरू हुआ

मुख्य बिंदु:

- NCGG राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर **कार्रवाई, अनुसंधान, अध्ययन और क्षमता निर्माण** के लिये प्रतिबद्ध है।
  - इसके प्रयास '**वसुधैव कुटुंबकम**' अर्थात् "विश्व एक परिवार है" के भारतीय दर्शन के अनुरूप हैं और द्विपक्षीय संबंधों को मज़बूत करने तथा अन्य देशों के साथ सहयोग को बढ़ावा देने पर ज़ोर देते हैं।
  - क्षमता निर्माण कार्यक्रम विभिन्न क्षेत्रों में परियोजना और जोखिम प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित कर सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करते हुए एक **समृद्ध क्रॉस कंट्री अनुभव और नीति संवाद हेतु एक मंच** प्रदान करने पर केंद्रित है।
  - इसके परिणामस्वरूप **अधिकारियों को परियोजनाओं हेतु योजना बनाने, निष्पादन के तरीके,** संस्थानों में हो रहे बदलाव और लोगों के सरकार से बढ़ते जुड़ाव के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्राप्त होगी।
- **उन्होंने दो सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों** पर भी प्रकाश डाला, जो प्रतिभागियों के लिये प्रासंगिक कई महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में अनेक परियोजनाओं और कार्यों को प्रदर्शित करते हुए **सार्वजनिक कार्यों के लिये परियोजना एवं जोखिम प्रबंधन** में अधिकारियों को आवश्यक कौशल से लैस करने हेतु सावधानीपूर्वक डिज़ाइन किया गया है।
  - इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में व्यापक क्षेत्र दौरे भी शामिल हैं, जिसमें अधिकारी **डाकपत्थर जलविद्युत और सिंचाई बाँध, उत्तराखंड में NHAI, नई दिल्ली में द्वारका एक्सप्रेसवे,** इंदिरा पर्यावरण भवन, **नई दिल्ली में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर NBCC** तथा दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन जैसी प्रमुख परियोजना स्थलों का दौरा शामिल है तथा प्रतिष्ठित ताजमहल की यात्रा के साथ इसका समापन होगा।

राष्ट्रीय सुशासन केंद्र (NCGG)

- NCGG की स्थापना वर्ष 2014 में सरकार द्वारा **कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय** के तहत एक शीर्ष स्तरीय स्वायत्त संस्थान के रूप में की गई थी।
- केंद्र की उत्पत्ति **राष्ट्रीय प्रशासनिक अनुसंधान संस्थान (NIAR)** से हुई है, जिसे **वर्ष 1995 में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (LBSNAA)** द्वारा स्थापित किया गया था, जो सिविल सेवाओं के लिये भारत सरकार का सर्वोच्च प्रशिक्षण संस्थान है।
  - NIAR को बाद में पुन: नामित किया गया और NCGG में शामिल कर लिया गया।
- NCGG **स्थानीय, राज्य से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक सभी क्षेत्रों में शासन संबंधी मुद्दों से निपटता है।**
- केंद्र को भारत और अन्य विकासशील देशों के शासन, नीति सुधार, क्षमता निर्माण तथा **सिविल सेवकों एवं टेक्नोक्रेट** के प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्य करने का आदेश दिया गया है। यह **थिंक टैंक** के रूप में भी कार्य करता है।

उत्तराखंड का एबॉट माउंटेन

चर्चा में क्यों ?

एबॉट माउंटेन उत्तराखंड की खूबसूरत हिमालय श्रृंखला में चंपावत ज़िले के लोहाघाट शहर में है।

नोट :

मुख्य बिंदु:

- एबॉट माउंटेन ऐतिहासिक महत्त्व रखता है, जिसका नाम **ब्रिटिश सर्जन डॉ. जेम्स एबॉट** के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने ब्रिटिश राज के दौरान कुमाऊँ के आयुक्त के रूप में कार्य किया था। इस भव्य शिखर के माध्यम से क्षेत्र के विकास में उनके योगदान को याद किया जाता है।
- अपनी प्राकृतिक सुंदरता के अलावा एबॉट माउंटेन **साहसिक प्रेमियों** के लिये स्वर्ग के रूप में भी कार्य करता है।
- यह क्षेत्र विविध प्रकार की वनस्पतियों और जीवों का निवास स्थल है, जिनमें दुर्लभ हिमालयी प्रजातियाँ जैसे **कस्तूरी मृग,** हिमालयी काले भालू और विभिन्न प्रकार की पक्षी प्रजातियाँ शामिल हैं।

भारतीय हिमालय क्षेत्र

- IHR में **भारत के दस राज्यों और चार पहाड़ी ज़िलों** जैसे जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मणिपुर, मिज़ोरम, नगालैंड, त्रिपुरा और असम में दिमा हसाओ, कार्बी आंगलोंग तथा पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग, कलिम्पोंग के पहाड़ी ज़िले शामिल हैं।
- अनियंत्रित मांग-संचालित आर्थिक विकास ने अव्यवस्थित शहरीकरण, पर्यावरणीय क्षरण और बढ़ते जोखिमों तथा कमज़ोरियों को उत्पन्न किया, जिससे हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के अद्वितीय मूल्यों से गंभीर समझौता हुआ है।
- आर्थिक विकास पर ध्यान देने के अलावा भारतीय हिमालय के सतत् विकास के रोडमैप को प्रासंगिक सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) के साथ समन्वित करने की आवश्यकता है।
- इसलिये हिमालय में विकास पूरी तरह से क्षेत्र के **पर्यावरणीय, सामाजिक-सांस्कृतिक और पवित्र सिद्धांतों** में अंतर्निहित होना चाहिये।

उत्तरकाशी में भूकंप

चर्चा में क्यों ?

नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी (National Centre for Seismology- NCS) के आँकड़ों के मुताबिक, हाल ही में उत्तराखंड के उत्तरकाशी ज़िले में रिक्टर पैमाने पर **2.6 तीव्रता** का भूकंप आया।

मुख्य बिंदु:

- भूकंप का केंद्र **अक्षांश 31.00** और **देशांतर 79.31** पर **5 किलोमीटर की गहराई** पर था।
- **राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र (पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत)** देश में भूकंप गतिविधि की निगरानी के लिये **भारत सरकार की नोडल एजेंसी** है।
- वर्तमान में **भारत में केवल 115 भूकंप वेधशालाएँ** हैं।
  - भूकंप वेधशाला का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू भूकंप के समय के सटीक पूर्वानुमान करने में सक्षम होना है।

नोट :

भूकंप

के बारे में

- पृथ्वी का कंपन; ऊर्जा के निकलने के कारण तरंगे उत्पन्न होती हैं, जो सभी दिशाओं में फैलकर भूकंप लाती हैं

अवकेंद्र (Hypocenter)

- वह स्थान जहाँ भूकंप का उद्गम होता है (पृथ्वी की सतह के नीचे)

अधिकेंद्र (Epicenter)

- अवकेंद्र के समीपस्थ स्थान (पृथ्वी की सतह पर)

भूकंपीय तरंगें

- भूगर्भिक तरंगें: पृथ्वी के अंदरूनी भाग से होकर सभी दिशाओं में आगे बढ़ती हैं।
  - P तरंगें: तीव्र गति से चलती हैं, ध्वनि तरंगों जैसी होती हैं, गैस, तरल व ठोस तीनों प्रकार के पदार्थों से गुज़र सकती हैं।
  - S तरंगें: धरातल पर कुछ समय अंतराल के बाद पहुँचती हैं, केवल ठोस पदार्थों के ही माध्यम से चलती हैं।
- धरातलीय तरंगें: भूकंपलेखी (सिस्मोग्राफ) पर अंत में अभिलेखित होती हैं, अधिक विनाशकारी, शैलों/चट्टानों के विस्थापन का कारण बनती हैं
  - लव तरंगें: लंबवत् विस्थापन के बिना S-तरंगों के समान गति (क्षैतिज), क्षैतिज गति प्रसार की दिशा के लंबवत्, रेले तरंगों की तुलना में तीव्र गति
  - रेले तरंगें: भूमि पर दीर्घवृत्ताकार पथ में दोलन उत्पन्न करती हैं, सभी भूकंपीय तरंगों में से अधिकांश के प्रसार का कारण बनती हैं, एक ऊर्ध्वाधर ताल में लंबवत् व क्षैतिज रूप से गति करती हैं

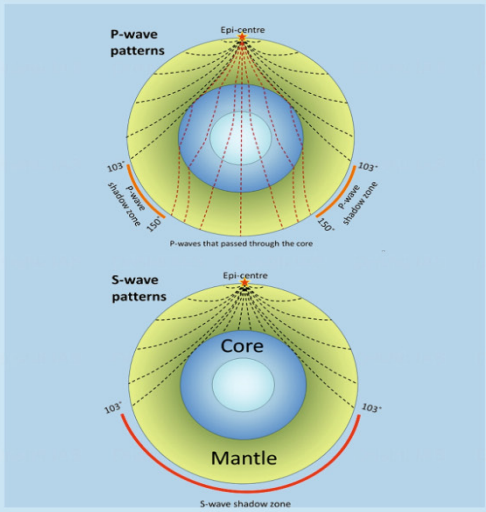

भूकंप के कारण

- किसी भ्रंश/भ्रंश ज़ोन के किनारे-किनारे ऊर्जा का निर्मुक्त होना (भूपर्पटी की शिलों में दरारें)
- टेक्टोनिक प्लेटों का संचलन (सबसे सामान्य कारण)
- ज्वालामुखी विस्फोट (शैल के तनाव में परिवर्तन - मैग्मा का अन्तःक्षेपण/निकासी)
- मानवीय गतिविधियाँ (खनन, रसायनों/परमाणु उपकरणों का विस्फोटन आदि)

भूकंप का मापन

- भूकंपमापी (Seismometer)- भूकंपीय तरंगों को मापता है
- रिक्टर पैमाना (Richter Scale)- परिमाण को मापता है (निर्मुक्त ऊर्जा; सीमा: 0-10)
- मरकैली (Mercalli)- तीव्रता को मापता है (दृश्यमान क्षति; सीमा: 1-12)

वितरण

- परि-प्रशांत मेखला (Circum-Pacific Belt)- सभी भूकंपों का 81%
- अल्पाइड भूकंप मेखला (Alpide Earthquake Belt)- सबसे बड़े भूकंपों का 17%
- मध्य अटलांटिक कटक (Mid-Atlantic Ridge)- अधिकांशतः जल के नीचे डूबा हुआ

भारत में भूकंप

- तकनीकी रूप से सक्रिय पर्वतों- हिमालय की उपस्थिति के कारण भारत भूकंप से अत्यंत प्रभावित देशों में से एक है।
- भारत को 4 भूकंपीय क्षेत्रों (II, III, IV, और V) में विभाजित किया गया है।

Drishti IAS

नोट :

उत्तराखंड वनाग्नि पर भारतीय वायुसेना द्वारा नियंत्रण जारी

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में उत्तराखंड सरकार ने **सर्वोच्च न्यायालय** को सूचित किया कि **वनाग्नि** की आपात स्थिति पर अब नियंत्रण कर लिया गया है

मुख्य बिंदु:

- मुख्यमंत्री ने **वनों से 'पिरूल' (चीड़ की पत्तियाँ)** एकत्र करने के लिये एक कुशल रणनीति की आवश्यकता पर बल दिया।
- उन्होंने **सभी प्रदेशवासियों** से पिरूल संग्रहण और आस-पास के वनों की सुरक्षा के **व्यापक अभियान में भाग लेने का आग्रह** किया।
- इसके अतिरिक्त, उन्होंने उल्लेख किया कि सरकार चीड़ की पत्तियों के संग्रह को प्रोत्साहित करने और वनाग्नि पर नियंत्रण के लिये **'पिरुल लाओ-पैसे पाओ'** पहल लागू कर रही है।
- इस मिशन के तहत वनाग्नि को कम करने के उद्देश्य से **पिरूल को संग्रहण केंद्र पर ₹50/किलो की दर से खरीदा जाएगा।**
- इस बीच, **भारतीय वायु सेना (IAF)** ने वनाग्नि को बुझाने में राज्य की मदद करना जारी रखा है। इसने **साढ़े 11 घंटे तक 23 उड़ानें भरीं** और पहाड़ में भड़की **वनाग्नि को बुझाने के लिये 44,600 लीटर जल का इस्तेमाल** किया।
- उत्तराखंड के **पौड़ी गढ़वाल क्षेत्र के वनों में लगी भीषण आग** से निपटने के लिये **भारतीय वायुसेना ने अपने Mi17 V5 हेलीकॉप्टरों** द्वारा **बांबी बकेट ऑपरेशन** चलाकर अति आवश्यक राहत प्रदान की।

बांबी बकेट ऑपरेशन (Bambi Bucket operation)

- बांबी बकेट, जिसे हेलीकॉप्टर बाल्टी या हेली बाल्टी भी कहा जाता है, एक विशेष कंटेनर है जिसे हेलिकॉप्टर के नीचे केबल द्वारा लटकाकर पहले नदी या तालाब में डुबो कर जल से भरा जाता है फिर उस **बकेट/बाल्टी के तल पर लगे एक वाल्व को खोलकर आग से प्रभावित क्षेत्र के उपर जल का छिड़काव** किया जाता है।
- बांबी बकेट विशेष रूप से वनाग्नि से बचने या उसका सामना करने में सहायक वह राहत प्रक्रिया है, जहाँ थल मार्ग द्वारा पहुँचना मुश्किल या असंभव है। विश्व भर में वनाग्नि का सामना करने के लिये प्राय: हेलीकॉप्टरों का ही प्रयोग किया जाता है।

वनाग्नि से उत्तराखंड के वन्य जीवन और पारिस्थितिक संतुलन को खतरा

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड के वनों में लगी आग राज्य के समृद्ध वन्य जीवन को खतरे में डाल रही है, जिसमें **बाघ**, **हाथी**, **तेंदुए**, साथ ही **पक्षियों** और **सरीसृपों** की एक बड़ी श्रृंखला शामिल है।

मुख्य बिंदु:

- पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है, विशेषकर पक्षियों और सरीसृपों के लिये स्थिति गंभीर बन चुकी है जिन्हें अपनी सीमित गतिशीलता के कारण आग से बचकर भागने में कठिनाई हो रही है।
- पर्यावरण फोटोग्राफर के अनुसार, वनाग्नि के कारण घोंसला बनाने वाले पक्षियों सहित कई पक्षी प्रजातियों की भयंकर हानि हुई है।
- वन संरक्षक (अनुसंधान), गंभीर रूप से **संकटग्रस्त येलो हेडेड टॉर्टोइज़** के बारे में चिंतित हैं क्योंकि वनाग्नि के दौरान इन्हें खतरा बढ़ जाता है जब ये सूखे **साल के पत्तों के नीचे आश्रय ढूँढते हैं।**

नोट :

- **पहले से ही इनकी घटती जीव संख्या** को देखते हुए, इन कछुओं की थोड़ी-सी भी संख्या के नष्ट होने से इस **प्रजाति के अस्तित्व पर बहुत गंभीर प्रभाव** पड़ सकता है।
- **'जंगल बचाओ, जीवन बचाओ'** अभियान से जुड़े गजेंद्र पाठक वनाग्नि के व्यापक पारिस्थितिक परिणामों पर ज़ोर देते हैं।
- पत्तियों को जलाने से न केवल वन्य जीवन को नुकसान होता है, बल्कि मृदा अपरदन की रोकथाम और **मृदा-स्वास्थ्य के लिये महत्त्वपूर्ण ह्यूमस परत** का भी ह्रास होता है।
- भृंग, चींटियाँ और मकड़ियों जैसे **कीटों के विलुप्त हो जाने** से **नाज़ुक पारिस्थितिक संतुलन बरकरार रखने में चुनौतियाँ** बढ़ गई हैं।

येलो हेडेड टॉर्टोइज़ (Yellow-Headed Tortoise)

- **वैज्ञानिक नाम:** इंडोटेस्टुडो एलोंगेट (*Indotestudo elongate*)
- **सामान्य नाम:** इलोंगेटेड टॉर्टोइज़, पीला कछुआ और साल वन कछुआ
- **वितरण:** यह **दक्षिण-पूर्व एशिया** और **भारतीय उपमहाद्वीप**, विशेषकर पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में पाए जाने वाले कछुए की एक प्रजाति है।
- **शारीरिक संरचना: 1 फुट तक लंबे** इन कछुओं में कुछ हद तक **संकीर्ण कवच और पीले सिर** होते हैं। इनके शेल/कवच आमतौर पर हल्के टैनिश-पीले या कैरेमेल रंग के होते हैं, जिन पर काले रंग के धब्बे होते हैं।
- IUCN रेड लिस्ट में स्थिति: **गंभीर रूप से**
- **जीवसंख्या:** IUCN के अनुसार पिछली तीन पीढ़ियों (90 वर्ष) में इस प्रजाति की जीवसंख्या में लगभग 80% की गिरावट आई है।
- **संकट: भोजन के लिये इसका बड़े पैमाने पर शिकार** किया जाता है और इसे स्थानीय उपयोग, जैसे **सजावटी मुखौटे तथा अंतर्राष्ट्रीय वन्यजीव व्यापार**, दोनों के लिये एकत्र किया जाता है। चीन में **कछुए की कवच को पीसकर** बनाया गया मिश्रण **कामोत्तेजक पदार्थ के रूप में** भी काम आता है।

नोट :

तड़ितझंझा

चर्चा में क्यों ?

भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार, एक पश्चिमी विक्षोभ से उत्तर पश्चिम भारत के प्रभावित होने का पूर्वानुमान लगाया गया है, जिसके प्रभाव से क्षेत्र में कई मौसमी बदलाव और वृद्धि होगी।

मुख्य बिंदु:

- 9 से 12 मई 2024 तक जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के अधिकांश हिस्सों में आँधी, आकाशी बिजली/तड़ित तथा तड़ितझंझा (तेज़ हवाओं के साथ बारिश) का अनुमान लगाया गया है।
- पश्चिमी विक्षोभ ऐसे चक्रवात हैं जो **कैस्पियन** या **भूमध्य सागर** में उत्पन्न होते हैं और **उत्तर पश्चिम भारत** में **गैर-मानसूनी वर्षा** लाते हैं।
- इन्हें भूमध्य सागर में उत्पन्न होने वाले एक **अतिरिक्त उष्णकटिबंधीय चक्रवात** के रूप में जाना जाता है, यह कम दाब का क्षेत्र होता है जो उत्तर पश्चिम भारत में आकस्मिक वर्षा, ओला और तुषार/धुँध लाता है।
- यह सर्दी और मानसून-पूर्व वर्षा का कारण बनता है तथा उत्तरी उपमहाद्वीप में **रबी फसल** के विकास के लिये महत्त्वपूर्ण है।
- यह हमेशा अच्छे मौसम का अग्रदूत नहीं होता है। कभी-कभी यह बाढ़, **आकस्मिक बाढ़, भू-स्खलन**, धूल भरी आँधियाँ, ओलावृष्टि एवं **शीत लहर** जैसी चरम मौसमी घटनाओं का कारण बन सकता है, जिससे जान-माल की क्षति हो सकती है, बुनियादी ढाँचे नष्ट हो सकते हैं और आजीविका प्रभावित हो सकती है।

रबी फसलें

- ये फसलें **रिट्रीटिंग/निवर्तनी मानसून एवं पूर्वोत्तर मानसून के मौसम के दौरान** बोई जाती हैं, **जिनकी बुआई** अक्तूबर में शुरू होती है और इस कारण ये **रबी या शीतकालीन फसल** कहलाती हैं।
- इन फसलों की कटाई **आमतौर पर गर्मी के मौसम में अप्रैल और मई के दौरान** होती है।
- इन **फसलों पर निवर्तनी मानसून वर्षा का ज़्यादा असर नहीं** होता है।
- प्रमुख रबी फसलें: **गेहूँ, चना, मटर, जौ** आदि हैं।
- इन फसली **बीज के अंकुरण के लिये गर्म जलवायु** और **फसलों की वृद्धि के लिये ठंडी जलवायु** की आवश्यकता होती है।

भीमताल झील के जलस्तर में कमी

चर्चा में क्यों ?

सूत्रों के अनुसार, राज्य के **कुमाऊँ क्षेत्र** में वर्षा और हिमपात की कमी के कारण उत्तराखंड के **नैनीताल ज़िले में** स्थित **भीमताल झील** का **जल स्तर 22 मीटर से घटकर 17 मीटर हो गया** है।

मुख्य बिंदु:

- मौजूदा स्थिति के कारण इस पहाड़ी शहर में **पर्यटकों की संख्या में भी भारी गिरावट** आई है।
  - झील में जल का स्तर कम होने से उन **हज़ारों लोगों की आजीविका प्रभावित** होगी जो होटल और रिसॉर्ट्स सहित **पर्यटन उद्योग पर निर्भर** हैं।
- अधिकारियों द्वारा झील की लगातार उपेक्षा और पूरे क्षेत्र में कई नालों को झील में बहाए जाने से स्थिति गंभीर हो गई है।

नोट :

भीमताल झील

- भीमताल झील **नैनीताल ज़िले की सबसे बड़ी झील** है। यह कुमाऊँ क्षेत्र की सबसे बड़ी झील है, जिसे **"भारत का झील ज़िला"** कहा जाता है।
  - इसका नाम प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत के दूसरे **पांडव भीम** के नाम पर रखा गया है।
- यह एक **प्राकृतिक झील** है और इसकी उत्पत्ति का श्रेय **भू-पर्पटी के खिसकने के कारण उत्पन्न हुए कई भ्रंश** को दिया जाता है।
- इस झील का निर्माण **वर्ष 1883 में ब्रिटिश काल के दौरान** हुआ था और इस पर चिनाई-बाँध (**Masonry Dam**) बनाया गया है।
- झील के चारों ओर समृद्ध वनस्पति और जैव पारिस्थितिकी तंत्र हैं साथ ही पहाड़ी ढलानों पर **देवदार एवं ओक के घने वन** हैं।
  - सर्दियों के महीनों के दौरान यह **कई प्रवासी पक्षियों का आवास** होता है।
  - क्षेत्र में पाई जाने वाली प्रसिद्ध प्रजातियों में **बुलबुल, वॉल क्रीपर, एमराल्ड डव, ब्लैक ईगल** और **टॉनी फिश आउल** शामिल हैं।

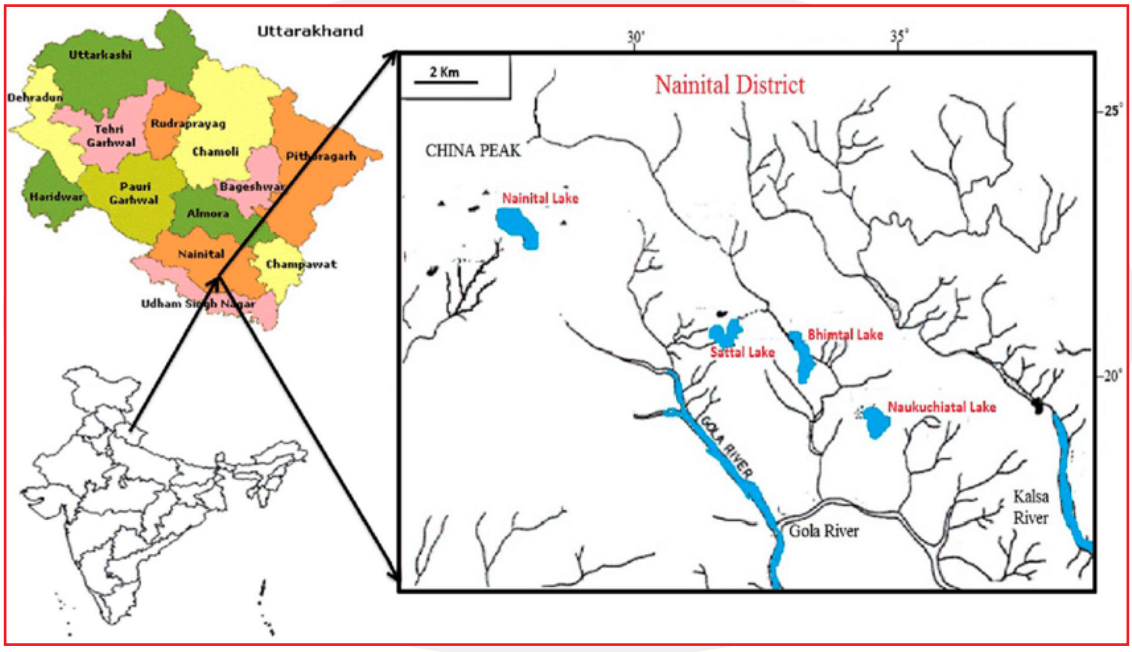

चार धाम यात्रा 2024

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में देवी **गंगा की मूर्ति** को उनके शीतकालीन अधिष्ठान **मुखबा गाँव से गंगोत्री** ले जाकर **गंगोत्री मंदिर** की अनुष्ठानिक शुरुआत की गई।

मुख्य बिंदु:

- परंपरा के अनुसार, समारोह की शुरुआत देवी गंगा को पालकी पर बिठाने और मंदिर से बाहर निकालने से पहले उनकी प्रार्थना के साथ हुई।
- तीर्थयात्रियों का प्रारंभिक जत्था ऋषिकेश से रवाना हुआ। धार्मिक हस्तियों और राजनीतिक नेताओं द्वारा विभिन्न समूहों को विभिन्न स्थानों से रवाना किया गया।
- **केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री** के द्वार अक्षय तृतीया (10 मई, 2024) को खुलेंगे तथा **बद्रीनाथ धाम** के द्वार 12 मई 2024 को खुलेंगे।

नोट :

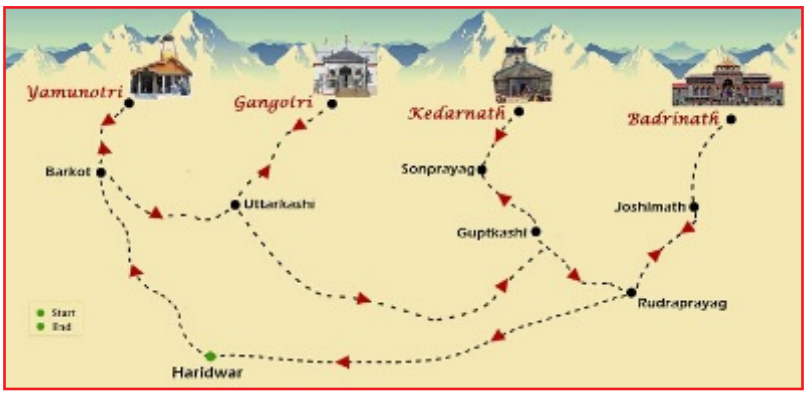

चारधाम यात्रा

- **यमुनोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी ज़िला।
  - **समर्पित:** देवी यमुना।
  - गंगा नदी के बाद यमुना नदी भारत की दूसरी सबसे पवित्र नदी है।
- **गंगोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी ज़िला।
  - **समर्पित:** देवी गंगा।
  - सभी भारतीय नदियों में सबसे पवित्र मानी जाती है।
- **केदारनाथ धाम:**
  - **स्थान:** रुद्रप्रयाग ज़िला।
  - **समर्पित: भगवान शिव**।
  - **मंदाकिनी नदी** के तट पर स्थित है।
  - भारत में 12 **ज्योतिर्लिंगों** (भगवान शिव के दिव्य प्रतिनिधित्व) में से एक।
- **बद्रीनाथ धाम:**
  - **स्थान:** चमोली ज़िला।
  - **पवित्र बद्रीनारायण मंदिर** का स्थान।
  - **समर्पित:** भगवान विष्णु।
  - **वैष्णवों** के पवित्र तीर्थस्थलों में से एक

IIT-रुड़की के शोधकर्त्ताओं द्वारा प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में IIT-**रुड़की** के शोधकर्त्ताओं ने **वर्षा पैटर्न का विश्लेषण करके** कम-से-कम छह घंटे की पूर्व चेतावनी देकर हिमालय क्षेत्र में भूस्खलन होने से पहले भविष्यवाणी करने के लिये एक फ्रेमवर्क विकसित की है।

मुख्य बिंदु:

- यह अध्ययन एक सहकर्मी-समीक्षित वैज्ञानिक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है और इसे भारत में अपनी तरह का पहला अध्ययन माना जाता है।

नोट :

- **मौसम विज्ञान, जल विज्ञान, भू-आकृति विज्ञान, रिमोट सेंसिंग और भू-तकनीकी इंजीनियरिंग** जैसे विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञों की संयुक्त विशेषज्ञता ने एक ऐसी विधि का निर्माण किया है जो **मौसम विज्ञान मॉडलिंग को मलबे के प्रवाह के संख्यात्मक सिमुलेशन के साथ जोड़ती है।**
- शोधकर्त्ता **मौसम अनुसंधान एजेंसियों** से पहाड़ियों में वर्षा के पैटर्न पर **वास्तविक समय का डेटा** एकत्र करेंगे।

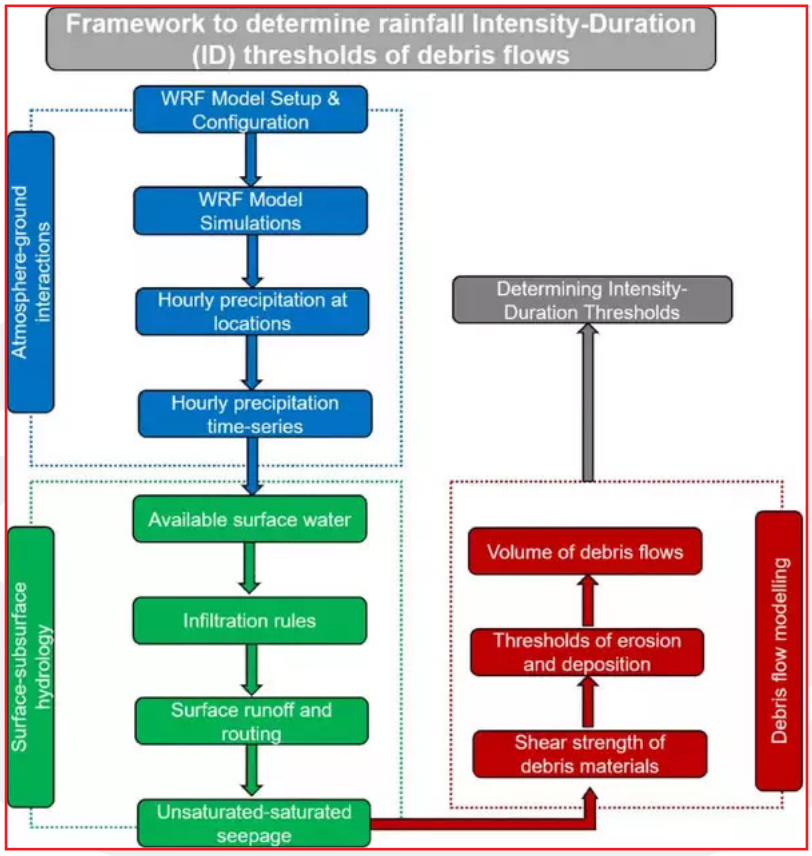

भू-स्खलन

- ये मुख्य रूप से **पहाड़ी इलाकों में होने वाली प्राकृतिक आपदाएँ हैं** जहाँ मृदा, चट्टान, भूविज्ञान और ढलान की अनुकूल परिस्थितियाँ होती हैं।
- किसी **ढलान से चट्टान, पत्थर, मृदा या मलबे के अचानक खिसकने को भूस्खलन कहा जाता है।**
- **कारण:**
  - इसके ट्रिगर करने वाले प्राकृतिक कारणों में **भारी वर्षा, भूकंप, बर्फ का पिघलना और बाढ़ के कारण ढलानों** का कटना शामिल है।
  - वे मानवजनित गतिविधियों जैसे **उत्खनन, पहाड़ियों एवं पेड़ों की कटाई, अत्यधिक बुनियादी ढाँचे के विकास और मवेशियों** द्वारा अत्यधिक चराई के कारण भी हो सकते हैं।
  - भूस्खलन को प्रभावित करने वाले कुछ मुख्य कारक हैं **आश्मिक, भूवैज्ञानिक संरचनाएँ जैसे भ्रंश, पहाड़ी ढलान, जल निकासी, भू-आकृति विज्ञान,** भूमि उपयोग और भूमि आवरण, मृदा की बनावट व गहराई तथा चट्टानों का अपक्षय।

नोट :

- जब **योजना बनाने और पूर्वानुमान लगाने के लिये भूस्खलन संवेदनशीलता** क्षेत्र निर्धारित किया जाता है तो इन सभी को ध्यान में रखा जाता है।

उत्तराखंड में बद्रीनाथ मंदिर भक्तों के लिये खुला

चर्चा में क्यों ?

- उत्तराखंड में गढ़वाल हिमालय में स्थित **बद्रीनाथ मंदिर** के कपाट सर्दियों के मौसम के दौरान बंद रहने के बाद 12 मई 2024 को भक्तों के लिये खोले गए।

मुख्य बिंदु:

- मंदिर के कपाट खुलने के साथ ही **बद्रीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री** की चारधाम यात्रा शुरू हो गई।
  - छह महीने तक बंद रहने के बाद बद्रीनाथ मंदिर के कपाट खोले गए और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अनुष्ठान किये गए तथा ढोल बजाए गए।
  - अक्षय तृतीया के अवसर पर केदारनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री मंदिर के कपाट भक्तों के लिये खोले गए।

बद्रीनाथ मंदिर

- यह मंदिर **विष्णु को समर्पित 108 दिव्य देसमों में से एक है, जो वैष्णवों के लिये पवित्र मंदिर हैं,** जिन्हें बद्रीनाथ के रूप में पूजा जाता है।
- यह उत्तराखंड के **चमोली ज़िले में अलकनंदा नदी के किनारे** स्थित है।

चीन सीमा पर सड़कों पर पैसा खर्च करेगी सरकार

चर्चा में क्यों ?

सूत्रों के मुताबिक, सरकार वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम (VVP) के तहत **उत्तराखंड और सिक्किम में चीन सीमा पर बनने वाली प्रत्येक किलोमीटर सड़क के लिये 2 करोड़ रुपए** से अधिक खर्च कर सकती है।

मुख्य बिंदु:

- **केंद्रीय गृह मंत्रालय (MHA)** ने चीन सीमा से लगे क्षेत्रों में कनेक्टिविटी में सुधार के लिये **अरुणाचल प्रदेश, उत्तराखंड और सिक्किम** में VVP के तहत 113 सड़कों को मंज़ूरी दी है।
  - अरुणाचल प्रदेश में जहाँ 105 सड़कों को मंज़ूरी दी गई है, वहीं **उत्तराखंड में पाँच** और सिक्किम में तीन सड़कों को भी मंज़ूरी दी गई है।
- गृह मंत्रालय के मंज़ूरी-पत्र के अनुसार, **उत्तराखंड के पिथौरागढ ज़िले में** 119 करोड़ रुपए की लागत से 43.96 किमी. सड़कें बनाई जानी हैं।
  - प्रत्येक किलोमीटर सड़क पर 2.7 करोड़ रुपए की लागत आने की उम्मीद है। एक बार निर्माण के बाद, "परिसंपत्ति" का रखरखाव राज्य सरकार को करना होगा।
  - **सिक्किम में,** VVP के तहत उत्तरी सिक्किम में **चुंगथांग और मंगन ब्लॉक** में 96 करोड़ रुपए की लागत से लगभग 18.73 किलोमीटर लंबी सड़कों एवं 350 मीटर स्टील पुलों को मंज़ूरी दी गई है।
  - प्रत्येक किलोमीटर सड़क निर्माण पर 2.4 करोड़ रुपए की लागत आएगी।

नोट :

वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम

- यह एक **केंद्रीय वित्तपोषित कार्यक्रम** है जिसकी घोषणा **केंद्रीय बजट वर्ष 2022-23** (2025-26 तक) में उत्तर में सीमावर्ती गाँवों को विकसित करने और ऐसे **सीमावर्ती गाँवों के निवासियों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लक्ष्य के साथ की गई।**
- इसमें **हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम और लद्दाख** के सीमावर्ती क्षेत्र शामिल होंगे।
- इसके तहत 2,963 गाँवों को कवर किया जाएगा, जिनमें से 663 को पहले चरण में कवर किये जाएंगे
- ग्राम पंचायतों की सहायता से ज़िला प्रशासन द्वारा वाइब्रेंट विलेज एक्शन प्लान बनाए जाएंगे
- **वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम की वजह से 'सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम' के साथ ओवरलैप की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी।**

स्थानांतरण के लिये सरकार को उत्तराखंड उच्च न्यायालय का निर्देश

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने उत्तराखंड राज्य सरकार को एक महीने के भीतर **अपने परिचालन को नैनीताल से बाहर** ले जाने अर्थात् **स्थानांतरण के लिये** एक नई साइट का पता लगाने का **निर्देश** दिया है, यह कहते हुए कि यह कदम जनता के सर्वोत्तम हित में है।

मुख्य बिंदु:

- न्यायालय ने **रजिस्ट्रार जनरल** को इस मुद्दे पर अधिवक्ताओं और आम जनता से **सुझाव लेने के लिये एक पोर्टल बनाने का** भी निर्देश दिया।
- **उच्च न्यायालय को हलद्वानी के गौलापार में स्थानांतरित** करने के **राज्य सरकार के पूर्व प्रस्ताव पर**, उच्च न्यायालय ने कहा कि इस उद्देश्य के लिये निर्धारित भूमि में 75% वन क्षेत्र था और **क्षेत्र में निर्माण से वनों की कटाई** होगी।
  - उच्च न्यायालय ने इसके स्थानांतरण और सुविधाओं के लिये आवश्यक भूमि के प्रकार हेतु कुछ सिफारिशें भी कीं, जिनमें **न्यायाधीशों, न्यायिक अधिकारियों, कर्मचारियों** तथा **न्यायालय कक्षों** के लिये उचित आवास शामिल हैं।
  - **परिसर को स्थानांतरित करने** के उच्च न्यायालय के निर्णय का **बार एसोसिएशन** ने काफी विरोध किया है।

भारतीय विधिज्ञ

- **परिचय**
  - भारतीय विधिज्ञ परिषद भारतीय बार को विनियमित करने और प्रतिनिधित्व करने के लिये **अधिवक्ता अधिनियम, 1961 के तहत** संसद द्वारा बनाई गई एक **संविधिक निकाय** है।
- **विनियामक कार्य:**
  - अधिवक्ताओं के लिये **पेशेवर आचरण और शिष्टाचार के मानक** निर्धारित करना।
  - अनुशासनात्मक कार्रवाइयों के लिये प्रक्रियाएँ स्थापित करना।
  - भारत में विधिक शिक्षा के लिये मानक निर्धारित करना और योग्य कानून डिग्री को मान्यता **अन्य दयित्व:**
  - अधिवक्ताओं के **अधिकारों, विशेषाधिकारों और हितों की रक्षा** करना।
  - चितों के लिये कानूनी सहायता का आयोजन करना।
  - विधिज्ञ परिषद के सदस्यों के लिये चुनाव आयोजित करना।
  - किसी भी मामले से निपटना जो राज्य विधिज्ञ परिषद द्वारा उसे भेजा जा सकता है।

नोट :

लुप्तप्राय हिमालयी जीवों पर वनाग्नि के कारण संकट

चर्चा में क्यों ?

वन विभाग के अनुसार, उत्तराखंड में प्रत्येक वर्ष घटित होने वाली वनाग्नि क्षेत्र के बहुमूल्य वन संसाधनों जैसे: **पेड़, पौधों, झाड़ियों, जड़ी-बूटियों और मृदा की मोटी उर्वर परतों** को काफी नुकसान पहुँचाती है।

- इससे लुप्तप्राय हिमालयी जीवों जैसे- **वन्य जीवों, सरीसृपों, स्तनधारियों, पक्षियों, तितलियों, मधुमक्खियों** और **मृदा को समृद्ध करने वाले जीवाणुओं** पर भी संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

मुख्य बिंदु:

- **चीयर तीतर, कलिज तीतर, रूफस-बेलिड कठफोड़वा, कॉमन रोज़, चॉकलेट पैंसी** एवं **कौवा जैसी एवियन प्रजातियों** का प्रजनन काल मार्च से जून तक होता है और यही वह अवधि है जब इस क्षेत्र के वनों में सबसे अधिक आगजनी की घटना होती है।
- हिमालयी तितलियों के संरक्षण की दिशा में कार्य कर रहे एक गैर-सरकारी संगठन (NGO) के अनुसार, हिमालय क्षेत्र में **तितलियों की कुल 350 प्रजातियाँ** पाई जाती हैं **जिनमें 120 प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार पर** हैं क्योंकि ये वनाग्नि की घटना में नष्ट हुए पोषण देने वाले पौधों पर ही प्रजनन के लिये आश्रित होती हैं।
- देहरादून स्थित **वन अनुसंधान संस्थान** द्वारा पूरे दक्षिण एशियाई क्षेत्र में पाए जाने वाले येलो हेडेड कछुए पर वनाग्नि के प्रभाव पर भी शोध किया जा रहा है।
- यह **वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972** की **अनुसूची 4 में सूचीबद्ध** है और इसके लुप्तप्राय होने के कारण यह वन्य जीवों और वनस्पतियों की संकटग्रस्त प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES) के परिशिष्ट में भी दर्ज किया गया है।
- वन विभाग के अनुसार, नवंबर 2023 से अब तक **उत्तराखंड में वनाग्नि की घटना ने 1,437 हेक्टेयर से अधिक वन क्षेत्रों को प्रभावित किया** है।

चीयर तीतर (Cheer Pheasant)

नोट :

- चीयर तीतर (***Catreus wallichii***), जिसे वालिश तीतर के नाम से भी जाना जाता है, तीतर वर्ग **Phasianidae** की एक सुभेद्य प्रजाति है।
- यह ***Catreus*** प्रजाति का एकमात्र सदस्य है।
- **IUCN रेड लिस्ट स्थिति:**
- **CITES स्थिति:** परिशिष्ट-I
- **WPA:** अनुसूची-I

रूफस-बेलिड कठफोड़वा (Rufous-Bellied Woodpecker)

- रूफस-बेलिड कठफोड़वा ***(Dendrocopos hyperythrus)*** **Picidae** वर्ग में पक्षी की एक प्रजाति है।
- यह भारतीय उपमहाद्वीप और **दक्षिण पूर्व एशिया** में **हिमालय के क्षेत्रों में** पाया जाता है।
- इसके प्राकृतिक आवास उपोष्णकटिबंधीय या **उष्णकटिबंधीय आर्द्र तराई-वन** तथा **उपोष्णकटिबंधीय या उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्वतीय वन** हैं।
- **IUCN रेड लिस्ट स्थिति:** कम चिंतनीय
- **CITES स्थिति:** मूल्यांकन नहीं किया गया
- **WPA:** अनुसूची-IV

शंभू नदी

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड के बागेश्वर ज़िले के कुँवारी गाँव में **शंभू नदी** पर एक बार फिर लगभग 2 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में एक **मानव निर्मित झील का** निर्माण किया गया है, जिससे **स्थानीय लोग आसन्न त्रासदी को लेकर चिंतित हैं।**

नोट :

मुख्य बिंदु:

- झील का यह पुनरुद्धार **वर्ष 2022 और 2023 की पिछली घटनाओं** की याद दिलाता है जब **भू-स्खलन के कारण नदी के मार्ग में बाधा उत्पन्न करने वाली तुलनीय संरचनाओं के कारण बहाव में संभावित बाढ़ को रोकने के लिये त्वरित प्रशासनिक कार्रवाई की गई थी।**
- **शंभू नदी बागेश्वर से निकलती** है और **चमोली ज़िले में पिंडर नदी में मिल** जाती है।

अपर्याप्त सिद्ध हुईं पाइन नीडल ऊर्जा परियोजनाएँ

चर्चा में क्यों ?

विद्युत उत्पन्न करने के लिये बड़ी मात्रा में ज्वलनशील पाइन नीडल का प्रयोग करने हेतु **उत्तराखंड नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी** (**UREDA**) द्वारा स्थापित **जैव-ऊर्जा परियोजनाएँ** "असफल" रही हैं, अधिकारियों का कहना है कि इनका प्रयोग करने के लिये उपयुक्त तकनीक अभी तक मौजूद नहीं है।

मुख्य बिंदु:

- राज्य के अधिकारियों ने **जलवायु परिवर्तन से प्रेरित अनावृष्टि** और **पाइन नीडल (चीड़ की तीक्ष्ण, नुकीली पत्तियाँ) व कृषि अपशिष्ट** जैसे कार्बनिक पदार्थों के बढ़ते भंडार जैसे कारकों के संयोजन के कारण होने वाली वार्षिक **वनाग्नि** के जोखिम को कम करने का प्राय: प्रयास किया है।
- **अप्रैल और मई 2024 में कम वर्षा के कारण** सूखे चीड़ के जमा हो जाने से क्षेत्र के वनों में लगी आग से संबंधित याचिकाओं के बाद **सर्वोच्च न्यायालय** ने उत्तराखंड सरकार की आलोचना की थी।
  - वर्ष 2021 में, राज्य सरकार ने विद्युत उत्पादन के लिये ईंधन के रूप में पाइन नीडल का प्रयोग करके **ऊर्जा परियोजनाएँ** स्थापित करने की एक योजना की घोषणा की।
  - प्रारंभिक प्रस्ताव में तीन चरणों (कुल मिलाकर लगभग 150 मेगावाट) में 10 किलोवाट से 250 किलोवाट तक की कई इकाइयों को स्थापित करना शामिल था।
  - 58 इकाइयों की स्थापना की आशंका के बावजूद, अब तक केवल छह 250 किलोवाट इकाइयाँ (कुल क्षमता 750 किलोवाट) स्थापित की गई हैं।
- **वर्ष 2023 में, उत्तराखंड सरकार** ने कहा कि पाइन नीडल परियोजनाओं से उत्पन्न विद्युत की कमी के कारण वह **अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्रय को पूरा करने में असमर्थ** थी।
- उत्तराखंड में पाइन नीडल की प्रचुरता एक मूल्यवान संसाधन प्रदान करती है।
  - आधिकारिक रिकॉर्ड बताते हैं कि राज्य के वन क्षेत्र का लगभग 16.36%, जो लगभग 3,99,329 हेक्टेयर है, में अधिकांश हिस्सा **चिड़ पाइन (Pinus Roxburghii)** वनों का है।
  - अनुमानत: प्रत्येक वर्ष 15 लाख टन से अधिक पाइन नीडल का उत्पादन होता है।
  - यदि इस अनुमानित राशि का 40% भी, अन्य कृषि अपशिष्टों के साथ, उपयोग किया जा सकता है, तो यह राज्य को अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में बहुत मदद करेगा, साथ ही रोज़गार के अवसर का सृजन करेगा और आजीविका का समर्थन करेगा।

नोट :

चिर पाइन (Pinus Roxburghii)

- **पाइनस रॉक्सबर्गी (Pinus Roxburghi)**, जिसे आमतौर पर चिर पाइन के नाम से जाना जाता है, **हिमालय क्षेत्र के स्थानीय देवदार-वृक्ष की एक प्रजाति** है। यह एक महत्त्वपूर्ण काष्ठ प्रजाति है और इसका व्यापक रूप से व्यावसायिक उद्देश्यों के लिये उपयोग किया जाता है।
- यह भारतीय उपमहाद्वीप, विशेष रूप से **भारत, नेपाल, भूटान** और **पाकिस्तान** के कुछ हिस्सों में का मूल वृक्ष है।
- यह एक **सदाबहार शंकुवृक्ष/ शंकुधारी वृक्ष** है जो 30-50 मीटर की ऊँचाई तक वृद्धि कर सकता है।
- पाइनस रॉक्सबर्गी की **छाल मोटी और परतदार** होती है, जिसका **रंग लाल-भूरा** होता है।

नोट :

- **पत्तियाँ सुई जैसी नुकीली** होती हैं, जो तीन के बंडलों में वव्यवस्थित होती हैं और 20-30 सेमी. तक लंबी हो सकती हैं।
- इस वृक्ष पर कोन/शंकु लगते हैं जिनमें द्विकोषीय लघु **बीजाणुधानियाँ (Microsporangia) अथवा बीजांडी शल्क** होते हैं।
- **संरक्षण की स्थिति:**
  - **IUCN स्थिति:** कम चिंतनीय (LC)

अभावपरक दृष्टिकोण: उत्तराखंड वनाग्नि

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **सर्वोच्च न्यायालय** ने उत्तराखंड सरकार से स्पष्टीकरण मांगा कि आग बुझाने के लिये **केंद्रीय निधि** का उपयोग क्यों नहीं किया गया।

मुख्य बिंदु:

- सर्वोच्च न्यायालय ने वनाग्नि से निपटने में उत्तराखंड सरकार द्वारा दिखाए गए **'अभावपरक' दृष्टिकोण** पर **उत्तराखंड के मुख्य सचिव** को 17 मई को न्यायालय के समक्ष पेश होने के लिये बुलाया।
- शीर्ष न्यायालय ने निर्देश दिया कि कोई भी राज्य चुनाव ड्यूटी के लिये वन अधिकारियों या वन विभाग के वाहनों को तैनात नहीं करेगा।
- मुख्य सचिव से वन विभाग में बड़ी रिक्तियों, अग्निशमन उपकरणों की कमी और निर्वाचन आयोग द्वारा दी गई विशिष्ट छूट के बावजूद वन अधिकारियों की तैनाती के बारे में भी स्पष्टीकरण देने को कहा गया है।
- **न्यायमूर्ति बी.आर. गवई** की अध्यक्षता वाली पीठ जिसमें **न्यायमूर्ति एस.वी.एन. भट्टी और न्यायमूर्ति संदीप मेहता** भी शामिल थे, ने कहा कि हालाँकि कई कार्य योजनाएँ तैयार की जाती हैं, लेकिन उनके कार्यान्वयन के लिये कोई कदम नहीं उठाया जाता है।
  - वनाग्नि के कारण **1,300 हेक्टेयर भूमि** प्रभावित हुई।
- उत्तराखंड के मुख्यमंत्री **पुष्कर सिंह धामी** ने पिरूल लाओ-पैसे पाओ मिशन की शुरुआत की थी।
  - इस अभियान के तहत, वनाग्नि को रोकने के लिये स्थानीय ग्रामीणों और युवाओं द्वारा वन में पड़े पिरूल (चीड़ के पेड़ की पत्तियाँ) को एकत्र किया जाएगा, उनका वज़न किया जाएगा तथा फिर निर्धारित **पिरूल संग्रह केंद्र** में संग्रहीत किया जाएगा।

चार धाम यात्रा

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **यमुनोत्री** में भारी भीड़ तथा **केदारनाथ और बद्रीनाथ** मार्गों पर लंबी यातायात अवरोधों के चिंताजनक दृश्यों ने सरकार को चार धाम यात्रा के लिये अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक समाधानों को प्राथमिकता देने को मजबूर किया है।

मुख्य बिंदु:

- उत्तराखंड में चार धाम यात्रा में चार मंदिरों, **बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री** के दर्शन शामिल हैं।
- चार धाम यात्रा का हिंदू धर्म में गहरा आध्यात्मिक महत्त्व है। यह यात्रा सामान्यत: **अप्रैल/मई से अक्तूबर/नवंबर** तक होती है।
- राज्य द्वारा एक **"धार्मिक यात्रा प्राधिकरण"** बनाने की योजना बना रहा है जो न केवल **चार धाम यात्रा** बल्कि **काँवर यात्रा** जैसी अन्य तीर्थयात्राओं को भी नियंत्रित किया जाएगा।
- प्राधिकरण सभी मुद्दों पर निर्णय लेगा, जैसे- **दैनिक तीर्थयात्रियों की संख्या, मार्ग, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा तैनाती** और अन्य सभी व्यवस्थाएँ तय करना।

नोट :

- उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश की भाँति ही धार्मिक आयोजनों के लिये नियामक संस्था को अपनाने पर विचार कर रहा है और कार्यान्वयन से पहले यह उत्तर प्रदेश के मॉडल का अध्ययन करेगा।

चार धाम यात्रा

- **यमुनोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी ज़िला।
  - **समर्पित:** देवी यमुना।
  - गंगा नदी के बाद यमुना नदी भारत की दूसरी सबसे पवित्र नदी है।
- **गंगोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी ज़िला।
  - **समर्पित:** देवी गंगा।
  - सभी भारतीय नदियों में सबसे पवित्र मानी जाती है।
- **केदारनाथ धाम:**
  - **स्थान:** रुद्रप्रयाग ज़िला।
  - **समर्पित: भगवान शिव**।
  - **मंदाकिनी नदी** के तट पर स्थित है।
  - भारत में **12 ज्योतिर्लिंगों** (भगवान शिव के दिव्य प्रतिनिधित्व) में से एक।
- **बद्रीनाथ धाम:**
  - **स्थान:** चमोली ज़िला।
  - **पवित्र बद्रीनारायण मंदिर** का स्थान।
  - **समर्पित:** भगवान विष्णु।
  - **वैष्णवों** के पवित्र तीर्थस्थलोंं में से एक

प्लास्टिक मुक्त गंगा

चर्चा में क्यों ?

भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) **एवं सोशल डेवलपमेंट फॉर कम्युनिटीज़ (SDC)** फाउंडेशन ने गंगा नदी और उसकी 15 सहायक नदियों को प्लास्टिक प्रदूषण से मुक्त करने तथा जलीय एवं स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिये **"प्लास्टिक मुक्त भविष्य की ओर"** नामक एक सहयोगी पहल शुरू की है

मुख्य बिंदु:

- यह अभियान **सात राज्यों, उत्तराखंड, यूपी, बिहार, पश्चिम बंगाल, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश और झारखंड** में पाँच दिनों तक चलेगा।
- यह **पहल मीठे जल की जैवविविधता पर प्लास्टिक के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाने** पर केंद्रित है।

भारतीय वन्यजीव संस्थान (Wildlife Institute of India-WII)

- यह **पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय** के अंतर्गत एक स्वतंत्र निकाय है।
- इसका गठन **वर्ष 1982** में किया गया था।

नोट :

- यह संस्थान देहरादून (उत्तराखंड) में स्थित है।
- यह वन्यजीव अनुसंधान और प्रबंधन में प्रशिक्षण कार्यक्रम, शैक्षणिक पाठ्यक्रम तथा सलाह प्रदान करता है।

गंगा नदी

- यह **भारत की सबसे लंबी नदी** है जो 2,510 किमी. लंबी है, यह पहाड़ों, घाटियों और मैदानों में बहती है एवं हिंदुओं द्वारा पृथ्वी पर सबसे पवित्र नदी के रूप में प्रतिष्ठित है।
- गंगा बेसिन **भारत, तिब्बत (चीन), नेपाल और बांग्लादेश में 10,86,000 वर्ग किमी.** के क्षेत्र तक विस्तृत है।
- भारत में यह **उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, झारखंड, हरियाणा, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश और केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली** को कवर करता है, जिसका क्षेत्रफल 8,61,452 वर्ग किमी. है जो लगभग देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 26% है।
- यह हिमालय में **गंगोत्री हिमनद** के हिम क्षेत्रों से निकलती है।
- इसे उद्गम स्रोत पर **भागीरथी** कहा जाता है। यह घाटी से नीचे **देवप्रयाग तक बहती** है जहाँ एक अन्य पहाड़ी नदी अलकनंदा से मिलती है, **फलस्वरूप इसे गंगा कहा जाता है।**
- यमुना और सोन नदी, दाहिनी ओर से मिलने वाली मुख्य सहायक नदियाँ हैं।

नोट :

- रामगंगा, घाघरा, गंडक, कोसी और महानंदा बाई ओर से गंगा नदी में मिलती हैं। चंबल व बेतवा दो अन्य महत्त्वपूर्ण उप-सहायक नदियाँ हैं।
- गंगा नदी का बेसिन दुनिया के सबसे उपजाऊ और घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से एक है एवं 1,000,000 वर्ग किमी. के क्षेत्र को कवर करता है।
- गंगा नदी डॉल्फिन एक लुप्तप्राय जलीय जीव है जो विशेष रूप से इस नदी में पाया जाता है।
- गंगा बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र (जमुना) से मिलती है और पद्मा या गंगा के नाम से अपना प्रवाह जारी रखती है।
- बंगाल की खाड़ी में गिरने से पूर्व गंगा नदी बांग्लादेश के सुंदरबन दलदल **में गंगा डेल्टा का विस्तार** करती है।

उत्तराखंड में अतिरिक्त वर्चुअल क्लासरूम

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड सरकार ने **टेलीकॉम कंसल्टेंट्स इंडिया (TCIL)** की सहायता से **840 अतिरिक्त वर्चुअल क्लासरूम** शुरू करने की योजना बनाई है

- ये वर्चुअल क्लासरूम देहरादून में **शिक्षकों को छात्रों के लिये लाइव ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित करने में सक्षम** बनाएंगे।

मुख्य बिंदु:

- पहले चरण में, यह योजना **कक्षा 6 से 12 तक के 1.9 लाख छात्रों तक विस्तारित** की जा चुकी है।
  - अधिकारी वर्तमान में यह सुनिश्चित करने के लिये कार्य कर रहे हैं कि वंचित छात्रों को बिना किसी तकनीकी समस्या के शिक्षा प्रदान की जा सके।
  - सामाजिक-आर्थिक बदलाव लाने के लिये **मेडिकल और इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं की** तैयारी कर रहे छात्रों को **कोचिंग** भी प्रदान की जाएगी।
- यह **कार्यक्रम** वर्तमान में **राज्य के 13 ज़िलों के अंतर्गत 500 सरकारी स्कूलों में लागू** किया जा रहा है।
  - इस कार्यक्रम के तहत वर्चुअल कक्षाओं में इंटरैक्टिव संचार को सक्षम करने के लिये **रिमोट संचालित टर्मिनलों** (Remote Operated Terminals- ROT) और **सैटेलाइट इंटरएक्टिव टेक्नोलॉजी** का प्रयोग किया जाता है, जिससे छात्र ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों तरह से अधिगम में सक्षम होते हैं।
  - इसके अतिरिक्त, **माता-पिता और शिक्षकों** को समर्पित अनुप्रयोगों के माध्यम से उनकी **प्रगति की निगरानी करने में भी सहायता** मिलती है।

गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान में हिम तेंदुए

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में उत्तराखंड के उत्तरकाशी ज़िले के गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान में एक हिम तेंदुआ देखा गया था।

मुख्य बिंदु:

- वर्ष 2024 की शुरुआत में जारी **भारत की नवीनतम** हिम तेंदुए की जीव-गणना के अनुसार **भारत में 718 हिम तेंदुए** हैं। जिनमें से **124 उत्तराखंड में** हैं।
  - इस पहाड़ी राज्य में **लद्दाख (477)** के बाद भारत में हिम तेंदुओं की दूसरी सबसे अधिक आबादी है। गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान में **38-40 हिम तेंदुओं** की आबादी है।
  - IUCN रेड लिस्ट में सुभेद्य के रूप में सूचीबद्ध, अनुमान है कि हिम तेंदुओं की वैश्विक आबादी 10,000 से कम है।
- उत्तराखंड में हिम तेंदुए **उत्तरकाशी, टेहरी, रुद्रप्रयाग, चमोली, पिथौरागढ़** और **बागेश्वर ज़िलों** में पाए जाते हैं।

नोट :

गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान

- इसे **वर्ष 1989 में स्थापित** किया गया था और यह उत्तराखंड के उत्तरकाशी ज़िले में **भागीरथी नदी** के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र स्थित है।
- गंगोत्री ग्लेशियर पर गंगा नदी का उद्गम स्थल **गौ-मुख** इस पार्क के अंदर स्थित है।
- इस उद्यान के तहत आने वाला क्षेत्र **गोविंद राष्ट्रीय उद्यान और केदारनाथ वन्यजीव अभयारण्य** के बीच एक जीवंत निरंतरता बनाता है।
- **वनस्पति:** यह उद्यान घने शंकुधारी वनों से घिरा हुआ है जिनमें ज़्यादातर समशीतोष्ण वन हैं। इस पार्क की सामान्य वनस्पतियों में चिरपाइन, देवदार, फर, स्प्रूस, ओक एवं रोडोडेंड्रॉन शामिल हैं।
- **जीव-जंतु:** इस उद्यान में विभिन्न दुर्लभ एवं लुप्तप्राय प्रजातियाँ, जैसे- **नीली भेड़, काले भालू, भूरे भालू, हिमालयन मोनल, हिमालयन स्नोकॉक, हिमालयन तहर, कस्तूरी मृग और हिम तेंदुए पाई जाती हैं।**

हिम तेंदुआ *(Snow Leopard)*

Drishti IAS

प्राय: इसे "Ghost of the Mountains" अर्थात "पहाड़ों का भूत" के रूप में संदर्भित किया जाता है।

आवास

मध्य और दक्षिणी एशिया के पर्वतीय क्षेत्र
हिम तेंदुआ रेंज वाले देशों की संख्या (12) - भारत, नेपाल, भूटान, चीन, मंगोलिया, रूस, कज़ाखस्तान, किर्गिज़स्तान, उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान

भारत में

पश्चिमी हिमालय : जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश
पूर्वी हिमालय : उत्तराखंड, सिक्किम तथा अरुणाचल प्रदेश

प्रमुख स्थान

हेमिस राष्ट्रीय उद्यान, लद्दाख
(इसे हिम तेंदुओं की 'वैश्विक राजधानी' के रूप में भी जाना जाता है)
ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क, हिमाचल प्रदेश
गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड
कंचनजंघा राष्ट्रीय उद्यान, सिक्किम

खतरे

- मानव- हिम तेंदुआ संघर्ष
- शिकार एवं आवास की क्षति
- अवैध शिकार
- जलवायु परिवर्तन

संरक्षण स्थिति

IUCN रेड लिस्ट: सुभेद्य (Vulnerable)
CITES - परिशिष्ट - I
भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972: अनुसूची 1

संरक्षण हेतु प्रयास

- ग्लोबल स्नो लेपर्ड एंड इकोसिस्टम प्रोटेक्शन (GSLEP) कार्यक्रम
- हिमाल संरक्षक - सामुदायिक स्वयंसेवी कार्यक्रम
- प्रोजेक्ट स्नो लेपर्ड (PSL)
- हिम तेंदुआ संरक्षण प्रजनन कार्यक्रम - पद्मजा नायडू हिमालयन जूलॉजिकल पार्क, पश्चिम बंगाल

उत्तराखंड में चीनी बगुला

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में आमतौर पर पूर्वोत्तर राज्यों, राजस्थान और भूटान में पाया जाने वाले पक्षी **चाइनीज़ पॉन्ड हेरॉन** को पहली बार उत्तराखंड में देखा गया है।

मुख्य बिंदु:

- विशेषज्ञों के मुताबिक, उत्तराखंड में चाइनीज़ पॉन्ड हेरॉन के अस्तित्त्व का कोई रिकॉर्ड नहीं था।
  - पहली बार इस पक्षी ने प्रजनन के लिये **लैंसडाउन वन प्रभाग के कोटद्वार क्षेत्र** को चुना है।
- गर्मियों के दौरान कोटद्वार और लैंसडाउन वन प्रभाग के सनेह क्षेत्र के घने वनों में कई प्रवासी पक्षी दिखाई देते हैं।
  - **पूर्वोत्तर राज्यों से पक्षियों का यहाँ आगमन/प्रवासन** इस बात का संकेत है कि यहाँ का परिवेश उनके लिये अनुकूल है।

चाइनीज़ पॉन्ड हेरॉन (Chinese Pond Heron)

- चाइनीज़ पॉन्ड हेरॉन (*Ardeola bacchus*) बगुला कुल का एक **पूर्वी एशियाई अलवण जलीय पक्षी** है।
  - यह पक्षियों की छह प्रजातियों में से एक है जिन्हें "पॉन्ड हेरॉन अर्थात् तालाब के बगुलों" (*genus Ardeola*) के नाम से जाना जाता है।
- यह आमतौर पर **47 cm** (19 इंच) लंबा होता है, इसके **सफेद पंख, पीले रंग की चोंच व काले सिरे, पीली आँखें और पैर** होते हैं।
  - **प्रजनन काल के दौरान इसका समग्र रंग लाल, नीला और सफेद** होता है तथा अन्य समय में भूरा-भूरा एवं सफेद रंग का होता है।
- यह **उथले अलवण जल** और **खारे जल वाले आर्द्रभूमि व तालाबों में** पाया जाता है।
- यह काफी सामान्य है और IUCN रेड लिस्ट द्वारा इसे **कम चिंतनीय (LC)** प्रजाति माना जाता है।

उत्तराखंड के वन क्षेत्र में परियोजना पर रोक

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने हरे-भरे **जिलिंग एस्टेट क्षेत्र** में वनों की कटाई या निर्वनीकरण के बारे में एक याचिका में उठाई गई चिंताओं के कारण **भीमताल-मुक्तेश्वर क्षेत्र** में एक प्रमुख होटल विकास को रोक दिया है।

मुख्य बिंदु:

- न्यायालय के अनुसार, घने जंगलों वाले हिस्से को एक होटल परियोजना के लिये वनों को काटने की अनुमति दी गई थी, जिसका उद्देश्य 20,000 वर्ग फुट के क्षेत्र में निर्माण गतिविधियों को अंजाम देना था।

नोट :

- इससे क्षेत्र की **नाज़ुक पारिस्थितिकी को अपूरणीय क्षति** होगी जो पर्याप्त **वन आवरण** बनाए रखने के राज्य के हित पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है।

- यहाँ मुख्य मुद्दा यह है कि उच्च न्यायालय ने **पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना 2006** के तहत अनिवार्य पर्यावरणीय मंज़ूरी के बिना निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने की अनुमति दी थी।
- हाल की रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि सर्वोच्च न्यायालय राज्य सरकार की वार्षिक **वनाग्नि** से निपटने में लापरवाही को लेकर गंभीर रूप से चिंतित था।

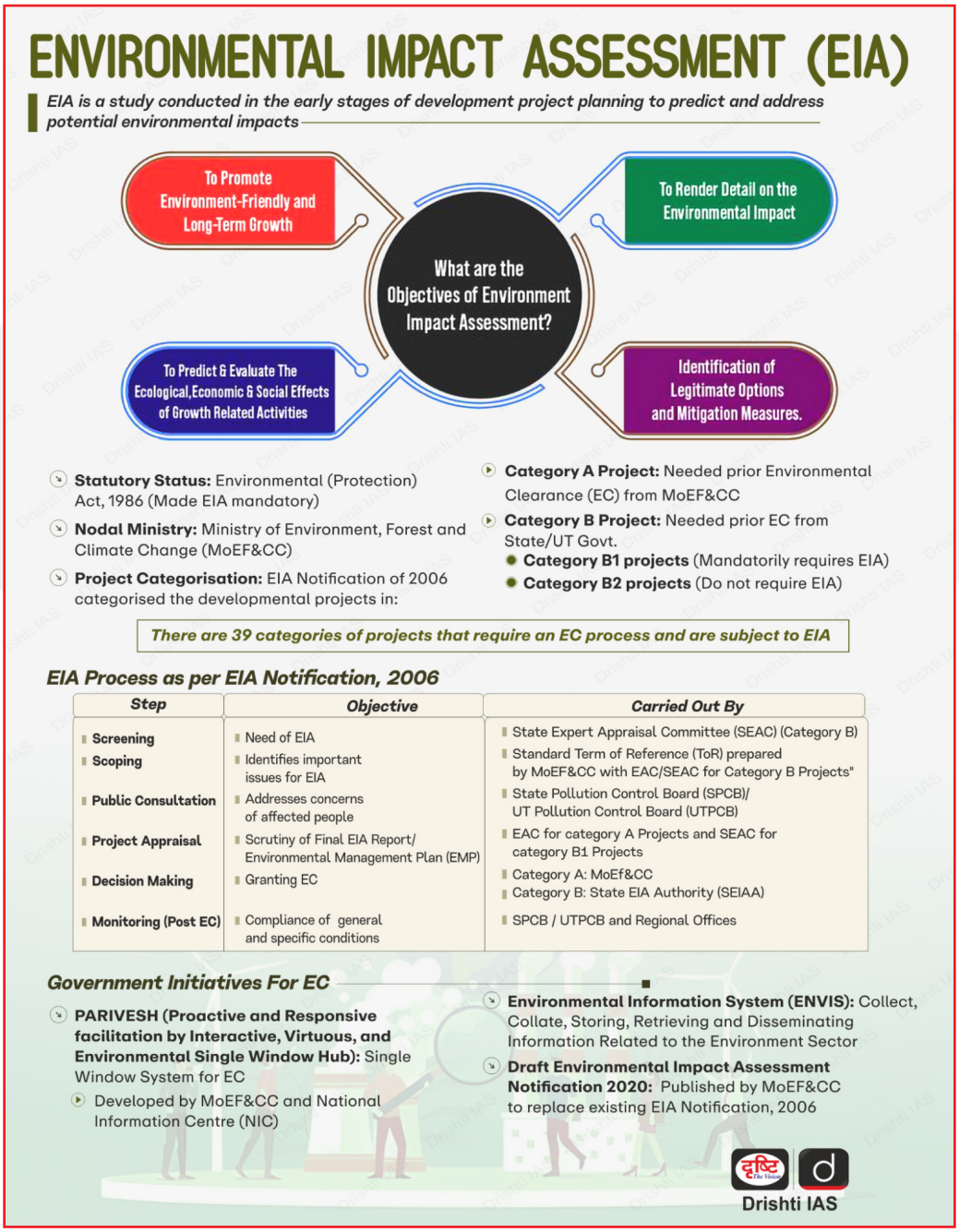

नोट :

उत्तराखंड में बाहरी लोगों का सत्यापन अभियान

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री के मुताबिक, लोकसभा चुनाव खत्म होने के बाद **उत्तराखंड पुलिस** दूसरे राज्यों से आकर **राज्य में रहने वाले लोगों** की पहचान की पुष्टि **के लिये सत्यापन** अभियान फिर से शुरू करेगी।

मुख्य बिंदु:

- इस **अभियान का उद्देश्य कानून व्यवस्था बनाए रखना** और **बाहरी लोगों की साख की जाँच** करना है।
  - यह बात सामने आई है कि राज्य के बाहर के लोग राज्य में आपराधिक वारदातें करते हैं और चले जाते हैं। कई बार आतंकियों को उत्तराखंड समेत अन्य राज्यों की पुलिस ने भी पकड़ा है।
- अधिकारियों के अनुसार, 4 जून 2024 को परिणाम घोषित होने के बाद भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लगाई गई आदर्श आचार संहिता (MCC) हटने के बाद सत्यापन अभियान पुन: शुरू किया जाएगा।
  - उत्तराखंड में 19 अप्रैल 2024 को **सात चरण के लोकसभा चुनाव के पहले चरण में मतदान** हुआ।

आदर्श आचार संहिता

- MCC एक **सर्वसम्मत दस्तावेज़** है। राजनीतिक दल स्वयं चुनाव के दौरान अपने आचरण को नियंत्रित रखने और संहिता के भीतर काम करने पर सहमत हुए हैं।
- यह निर्वाचन आयोग को **संविधान के अनुच्छेद 324** के तहत दिये गए जनादेश को ध्यान में रखते हुए मदद करता है, जो उसे संसद और राज्य विधानमंडलों के लिये **स्वतंत्र तथा निष्पक्ष चुनावों की निगरानी एवं संचालन** करने की शक्ति देता है।
- MCC **चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की तारीख से परिणाम** की घोषणा की तारीख तक चालू रहता है।
- संहिता लागू रहने के दौरान सरकार **किसी वित्तीय अनुदान की घोषणा नहीं कर सकती**, सड़कों या अन्य सुविधाओं के निर्माण का वादा नहीं कर सकती और न ही सरकारी या सार्वजनिक उपक्रम में कोई तदर्थ नियुक्ति कर सकती है।

उत्तराखंड में राजस्व पुलिस व्यवस्था समाप्त

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **उत्तराखंड उच्च न्यायालय** ने राज्य सरकार को एक वर्ष के भीतर **राजस्व पुलिस की व्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त करने** और अपने अधिकार क्षेत्र के तहत क्षेत्रों को नियमित पुलिस को सौंपने का निर्देश दिया है।

- उत्तराखंड **देश का एकमात्र राज्य** है जहाँ **राजस्व पुलिस की व्यवस्था नियमित पुलिस के साथ-साथ मौजूद** है।

मुख्य बिंदु:

- राजस्व पुलिस, जो **राजस्व विभाग के अधिकारियों द्वारा संचालित** होती है, के पास **सीमित शक्तियाँ** हैं और इसके अधिकार क्षेत्र में केवल पहाड़ी राज्य के सुदूर ग्रामीण क्षेत्र आते हैं।
- उच्च न्यायालय ने **वर्ष 2018 में** भी राज्य से राजस्व पुलिस की **लगभग एक सदी पुरानी प्रथा को हटाने का आदेश** दिया था।
- **राज्य कैबिनेट** ने चरणबद्ध तरीके से **राजस्व पुलिस प्रणाली को समाप्त करने** के लिये **अक्तूबर 2022** में एक **प्रस्ताव पारित** किया था।

नोट :

- **वर्ष 2004** में **नवीन चंद्रा बनाम राज्य सरकार** के मामले में **सर्वोच्च न्यायालय** ने इस व्यवस्था को समाप्त करने की आवश्यकता समझी।
  - सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि राजस्व पुलिस को नियमित पुलिस की तरह प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है।
  - **बुनियादी सुविधाओं के अभाव** के कारण **राजस्व पुलिस के लिये किसी अपराध की समीक्षा करना कठिन** हो जाता है।

राजस्व पुलिस व्यवस्था (Revenue Police System)

- उत्तराखंड में **राजस्व पुलिस प्रणाली 1800 के दशक में** अस्तित्त्व में आई जब **टिहरी के शासकों ने गोरखाओं के हाथों अपने क्षेत्र खो दिये।**
  - उन्होंने भुगतान के बदले में अंग्रेज़ों से **गोरखाओं को गढ़वाल से बाहर निकालने का अनुरोध** किया। युद्ध के बाद शासक भुगतान करने में असमर्थ रहे और बदले में **अंग्रेज़ों ने गढ़वाल का पश्चिमी भाग अपने पास रख लिया।**
  - वर्तमान उत्तराखंड में पाए जाने वाले प्राकृतिक संसाधनों और खनिजों से **राजस्व एकत्रित करने के लिये अंग्रेज़ों ने** मुगल प्रशासन के समान पटवारी, कानूनगो, लेखपाल आदि पदों के साथ **एक राजस्व प्रणाली लागू की।**
    - यह निर्णय लिया गया कि उत्तराखंड के पहाड़ी हिस्सों में किसी विशेष पुलिस की आवश्यकता नहीं है क्योंकि पहाड़ियों पर बहुत कम अपराध होते हैं और इसलिये एक समर्पित पुलिस बल रखना अनावश्यक समझा गया।

उत्तराखंड में UCC कार्यान्वयन

चर्चा में क्यों ?

सूत्रों के अनुसार, वर्ष 2024 के अंत तक उत्तराखंड में **समान नागरिक संहिता (UCC)** लागू होने की उम्मीद है, एक ऐसी सुविधा शुरू करने की प्रक्रिया चल रही है जो **लिव-इन और विवाहित जोड़ों को अपने रिश्ते को पंजीकृत करने में सक्षम बनाएगी।**

- उत्तराखंड विधानसभा ने **7 फरवरी, 2024** को UCC बिल पारित किया।

मुख्य बिंदु:

- UCC विवाह की तरह ही लिव-इन संबंधों के पंजीकरण का आह्वान करता है और कहता है कि **लिव-इन पार्टनर की उम्र 18 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिये।**
  - अधिकारियों के मुताबिक **सरकारी कर्मचारियों की ट्रेनिंग ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में आयोजित की जाएगी।**
  - **ऑनलाइन पंजीकरण सुविधा** सरकारी कर्मचारियों के साथ-साथ दंपत्ति दोनों के लिये लाभदायक होगी क्योंकि इससे रजिस्ट्रार के कार्यालय में कई बार जाने की आवश्यकता कम हो जाएगी।
  - हालाँकि **18 से 21 वर्ष की आयु के जोड़ों के माता-पिता को उनके बच्चों** के लिव-इन रिलेशनशिप के बारे में सूचित किया जाएगा।
- संसद में पारित **विधेयक** में कहा गया है कि **बिना पंजीकरण कराए एक महीने से अधिक समय तक लिव-इन रिलेशनशिप में** रहने पर तीन महीने तक की कैद या 10,000 रुपए तक का जुर्माना या दोनों हो सकते हैं।
  - यदि **लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाली किसी महिला को उसके साथी ने छोड़ दिया है,** तो **वह उससे गुज़ारा भत्ता का दावा करने की हकदार होगी,** जिसके लिये वह उस सक्षम अदालत से संपर्क कर सकती है, जिसका उस स्थान पर अधिकार क्षेत्र हो, जहाँ वे आखिरी बार साथ रहे थे।
  - **पहाड़ी राज्य के छोटे आदिवासी समुदाय को प्रस्तावित कानून से छूट दी गई है,** जो लिव-इन रिलेशनशिप के पंजीकरण को भी अनिवार्य बनाता है।

नोट :

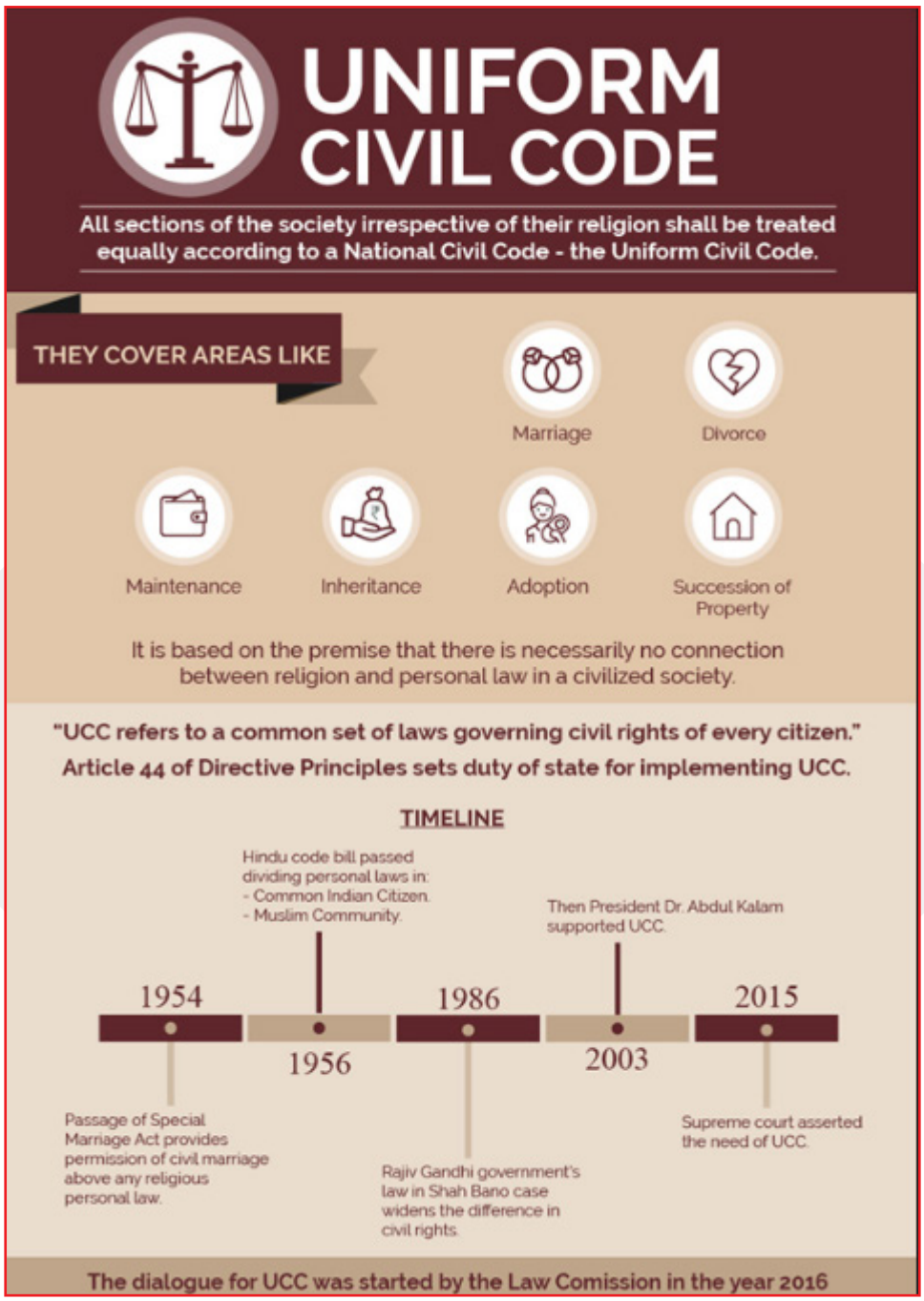

चारधाम तीर्थयात्रा के लिये विनियामक प्रणाली

चर्चा में क्यों ?

तीर्थयात्रियों की भारी भीड़ से मजबूर होकर, उत्तराखंड सरकार वर्ष 2019 के **'देवस्थानम प्रबंधन बोर्ड'** के समान चारधाम तीर्थयात्रा हेतु एक विनियामक प्रणाली शुरू करने के लिये तैयार है, जिसे पुजारियों के विरोध के कारण छोड़ दिया गया था।

नोट :

मुख्य बिंदु:

- सरकार ने राज्य में **चारधाम और अन्य धार्मिक तीर्थयात्राओं को विनियमित करने हेतु एक 'नए प्राधिकरण या संस्थान' के गठन का सुझाव देने के लिये एक विशेष उच्च-स्तरीय समिति (HLC)** का गठन किया है।
- राज्य सरकार द्वारा गठित HLC को भविष्य में उत्तराखंड में तीर्थयात्राओं के सुचारु और निर्बाध विनियमन पर ध्यान देने का कार्य सौंपा गया है।
- यह **गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ और केदारनाथ मंदिरों** के लिये चल रही चारधाम यात्रा में भक्तों के दैनिक प्रवाह की निगरानी तथा विनियमन भी करेगा।

चार धाम यात्रा

- **यमुनोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी ज़िला।
  - **समर्पित:** देवी यमुना।
  - गंगा नदी के बाद यमुना नदी भारत की दूसरी सबसे पवित्र नदी है।
- **गंगोत्री धाम:**
  - **स्थान:** उत्तरकाशी ज़िला।
  - **समर्पित:** देवी गंगा।
  - सभी भारतीय नदियों में सबसे पवित्र मानी जाती है।
- **केदारनाथ धाम:**
  - **स्थान:** रुद्रप्रयाग ज़िला।
  - **समर्पित: भगवान शिव**।
  - **मंदाकिनी नदी** के तट पर स्थित है।
  - भारत में 12 **ज्योतिर्लिंगों** (भगवान शिव के दिव्य प्रतिनिधित्व) में से एक।
- **बद्रीनाथ धाम:**
  - **स्थान:** चमोली ज़िला।
  - पवित्र बद्रीनारायण मंदिर का स्थान।

नोट :

- **समर्पित:** भगवान विष्णु।
- वैष्णवों के पवित्र तीर्थस्थलों में से एक

राजाजी टाइगर रिज़र्व

चर्चा में क्यों

मुख्य वन्यजीव वार्डन के अनुसार, **कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व** से राजाजी टाइगर रिज़र्व में स्थानांतरित की गई एक बाघिन ने चार शावकों को जन्म दिया है।

मुख्य बिंदु:

- यह बाघिन कॉर्बेट टाइगर रिज़र्व से राजाजी टाइगर रिज़र्व में स्थानांतरित की गई तीन बाघिनों में से एक है।
- राजाजी राष्ट्रीय उद्यान **हिमाचल प्रदेश और हरियाणा** सहित अन्य संभावित बाघ आवासों के लिये एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है
- पश्चिमी राजाजी टाइगर रिज़र्व में **दिसंबर 2020, जनवरी 2021, मई 2023 में चार बाघ,** तीन मादा और एक नर का स्थानांतरण किया गया।

राजाजी टाइगर रिज़र्व

- **स्थान:** हरिद्वार (उत्तराखंड), शिवालिक पर्वतमाला की तलहटी में। यह **राजाजी राष्ट्रीय उद्यान का हिस्सा** है।
- **पृष्ठभूमि:** राजाजी राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना वर्ष 1983 में उत्तराखंड में तीन अभयारण्यों यानी राजाजी, मोतीचूर और चीला को मिलाकर की गई थी।
  - इसका नाम प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सी. राजगोपालाचारी के नाम पर रखा गया था; जो लोकप्रिय रूप से "राजाजी" के नाम से जाने जाते हैं।
  - इसे वर्ष 2015 में देश का 48वाँ बाघ अभयारण्य घोषित किया गया था।
- **मुख्य विशेषताएँ:**
  - **वनस्पति:** चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती वन, नदी-वनस्पति, झाड़ियाँ, घास के मैदान और देवदार के वन इस पार्क में वनस्पतियों की शृंखला का निर्माण करते हैं।
    - साल (*Shorea robusta*) विशिष्ट प्रमुख वृक्ष प्रजाति है।
  - **जीव-जंतु:** यह रिज़र्व बाघ, हाथी, तेंदुआ, हिमालयी काला भालू, स्लॉथ भालू, सियार, लकड़बग्घा, स्पॉटेड डियर, सांभर, बार्किंग डियर, नीलगाय, बंदरों और पक्षियों की 300 से अधिक प्रजातियों सहित स्तनधारियों की 50 से अधिक प्रजातियों का निवास स्थान है।
  - **नदियाँ:** गंगा और सोंग नदियाँ यहाँ से बहती हैं।

उत्तराखंड में भूकंप

चर्चा में क्यों ?

राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार, हाल ही में उत्तराखंड के **पिथौरागढ़ ज़िले** में 3.1 तीव्रता का भूकंप आया, जिसका **केंद्र** धरती की सतह से लगभग **5 किलोमीटर** नीचे था।

- **राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र,** देश में भूकंप गतिविधि की निगरानी के लिये **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत केंद्र की नोडल एजेंसी है।**

मुख्य बिंदु:

- उत्तराखंड में **भूकंपीय गतिविधि बहुत ज़्यादा** होती है तथा ज़्यादातर क्षेत्र **भूकंपीय क्षेत्र IV और V** के अंतर्गत आते हैं।
- **हिमालय विश्व की सबसे नवीनतम पर्वत शृंखला है,** जो लगभग 50 मिलियन वर्ष पुरानी है। यह पर्वत शृंखला लगभग **5 मिमी. प्रतिवर्ष** की दर से बढ़ती है **क्योंकि भारतीय टेक्टोनिक प्लेट तिब्बती प्लेट के नीचे मुड़ जाती है।**

नोट :

भूकंप

के बारे में

- पृथ्वी का कंपन; ऊर्जा के निकलने के कारण तरंगे उत्पन्न होती हैं, जो सभी दिशाओं में फैलकर भूकंप लाती हैं

अवकेंद्र (Hypocenter)

- वह स्थान जहाँ भूकंप का उद्गम होता है (पृथ्वी की सतह के नीचे)

अधिकेंद्र (Epicenter)

- अवकेंद्र के समीपस्थ स्थान (पृथ्वी की सतह पर)

भूकंपीय तरंगें

- भूगर्भिक तरंगें: पृथ्वी के अंदरूनी भाग से होकर सभी दिशाओं में आगे बढ़ती हैं।
  - P तरंगें: तीव्र गति से चलती हैं, ध्वनि तरंगों जैसी होती हैं, गैस, तरल व ठोस तीनों प्रकार के पदार्थों से गुज़र सकती हैं।
  - S तरंगें: धरातल पर कुछ समय अंतराल के बाद पहुँचती हैं, केवल ठोस पदार्थों के ही माध्यम से चलती हैं।
- धरातलीय तरंगें: भूकंपलेखी (सिस्मोग्राफ) पर अंत में अभिलेखित होती हैं, अधिक विनाशकारी, शैलों/चट्टानों के विस्थापन का कारण बनती हैं
  - लव तरंगे: लंबवत् विस्थापन के बिना S-तरंगों के समान गति (क्षैतिज), क्षैतिज गति प्रसार की दिशा के लंबवत्, रेले तरंगों की तुलना में तीव्र गति
  - रेले तरंगें: भूमि पर दीर्घवृत्ताकार पथ में दोलन उत्पन्न करती हैं, सभी भूकंपीय तरंगों में से अधिकांश के प्रसार का कारण बनती हैं, एक ऊर्ध्वाधर ताल में लंबवत् व क्षैतिज रूप से गति करती हैं

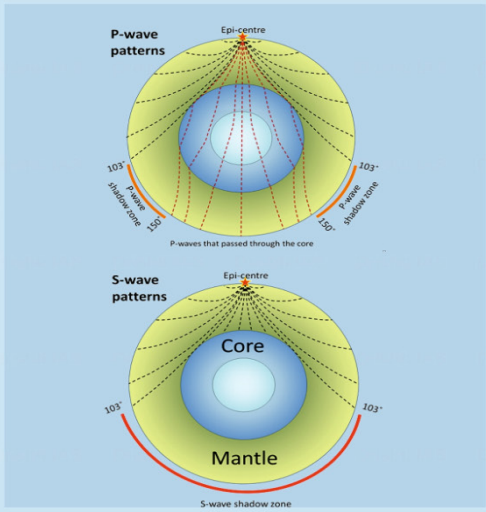

भूकंप के कारण

- किसी भ्रंश/भ्रंश ज़ोन के किनारे-किनारे ऊर्जा का निर्मुक्त होना (भूपर्पटी की शिलों में दरारें)
- टेक्टोनिक प्लेटों का संचलन (सबसे सामान्य कारण)
- ज्वालामुखी विस्फोट (शैल के तनाव में परिवर्तन - मैग्मा का अन्तःक्षेपण/निकासी)
- मानवीय गतिविधियाँ (खनन, रसायनों/परमाणु उपकरणों का विस्फोटन आदि)

भूकंप का मापन

- भूकंपमापी (Seismometer)- भूकंपीय तरंगों को मापता है
- रिक्टर पैमाना (Richter Scale)- परिमाण को मापता है (निर्मुक्त ऊर्जा; सीमा: 0-10)
- मरकैली (Mercalli)- तीव्रता को मापता है (दृश्यमान क्षति; सीमा: 1-12)

वितरण

- परि-प्रशांत मेखला (Circum-Pacific Belt)- सभी भूकंपों का 81%
- अल्पाइड भूकंप मेखला (Alpide Earthquake Belt)- सबसे बड़े भूकंपों का 17%
- मध्य अटलांटिक कटक (Mid-Atlantic Ridge)- अधिकांशतः जल के नीचे डूबा हुआ

भारत में भूकंप

- तकनीकी रूप से सक्रिय पर्वतों- हिमालय की उपस्थिति के कारण भारत भूकंप से अत्यंत प्रभावित देशों में से एक है।
- भारत को 4 भूकंपीय क्षेत्रों (II, III, IV, और V) में विभाजित किया गया है।

Drishti IAS

नोट :

सरकार ने CAA के तहत नागरिकता देना शुरू किया

चर्चा में क्यों ?

हाल ही में **गृह मंत्रालय** ने घोषणा की कि सरकार ने **पश्चिम बंगाल, हरियाणा और उत्तराखंड** में नागरिकता संशोधन अधिनियम, 2024 के तहत **नागरिकता प्रदान करना शुरू** कर दिया है।

मुख्य बिंदु:

- 15 मई को, केंद्रीय गृह सचिव द्वारा नई दिल्ली में उम्मीदवारों को नागरिकता प्रमाण-पत्र का प्रारंभिक बैच प्रस्तुत किया गया, जो दिल्ली में अधिकार प्राप्त समिति द्वारा अनुमोदित **नागरिकता (संशोधन) नियम, 2024** के जारी होने के बाद किया गया।
- गृह मंत्रालय द्वारा 11 मार्च 2024 को जारी नागरिकता संशोधन नियम, 2024 ने **CAA के कार्यान्वयन** का रास्ता साफ कर दिया है, जिसे **वर्ष 2019 में संसद द्वारा अनुमोदित** किया गया था।
  - दिशा-निर्देशों के अनुसार, **पाकिस्तान, अफगानिस्तान** और **बांग्लादेश** के **छह अल्पसंख्यक समूहों के प्रवासी** पूर्वव्यापी प्रभाव से CAA के तहत भारतीय नागरिकता के लिये आवेदन कर सकते हैं।
- **CAA- 2019 के संशोधन** के तहत, जो प्रवासी 31 दिसंबर 2014 तक भारत पहुँचे थे और जिन्हें अपने देश में "**धार्मिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा था या धार्मिक उत्पीड़न की आशंका थी**" वे **नए कानून के तहत नागरिकता के लिये पात्र** हो गए।
  - इन प्रवासियों को **छह वर्ष के भीतर त्वरित भारतीय नागरिकता** प्रदान की जाएगी। संशोधन ने इन प्रवासियों के देशीकरण/नागरिकीकरण के लिये **निवास की आवश्यकता को ग्यारह वर्ष से घटाकर पाँच वर्ष** कर दिया।

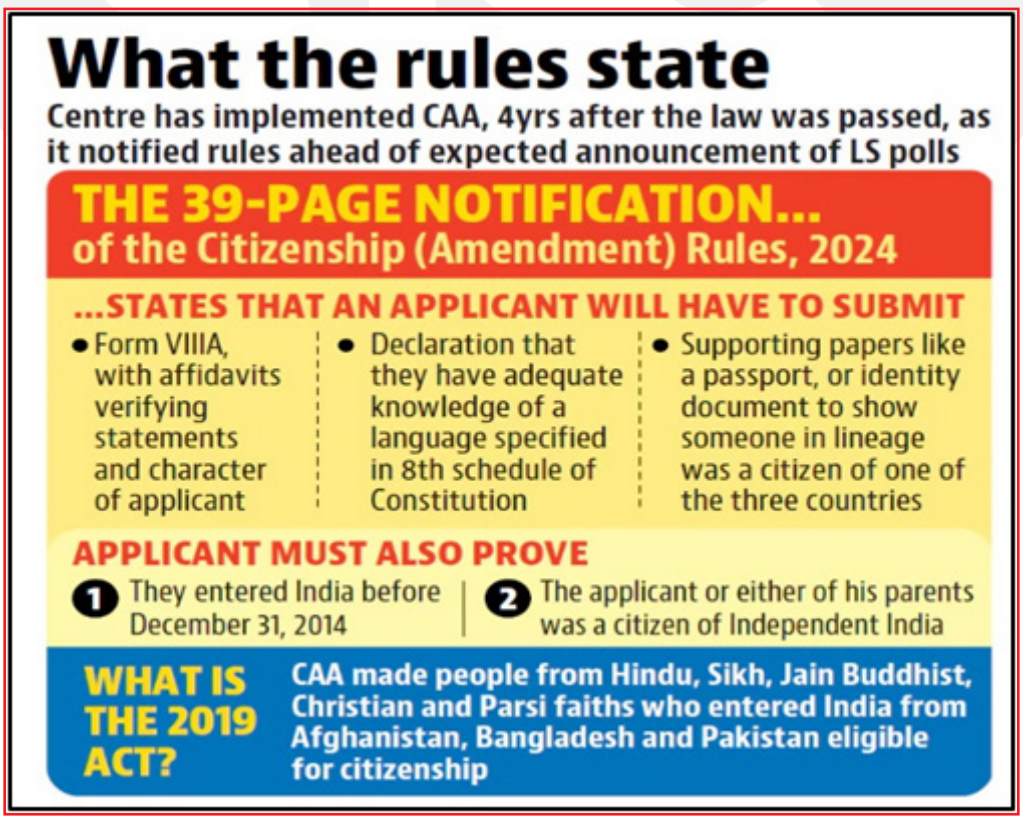

नोट :

उत्तराखंड की फूलों की घाटी

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड में फूलों की घाटी पर्यटकों के लिये 1 जून से खुल रही है। यह उत्तराखंड के नंदा देवी बायोस्फीयर रिज़र्व के भीतर स्थित है, जिसे वर्ष 2005 में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) विश्व धरोहर के रूप में शामिल किया गया था।

प्रमुख बिंदु:

- फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान में **हिमालय की 300 से अधिक देशी फूलों की प्रजातियाँ** हैं, जो जून से नवंबर तक मानसून के मौसम में देखी जा सकती हैं।
- इसमें **300 से ज़्यादा तरह की पुष्प प्रजातियाँ** शामिल हैं, जैसे- **एनीमोन, गेरेनियम, ब्लू पॉपी और ब्लूबेल**। यह ग्रे लंगूर, उड़ने वाली गिलहरी, **हिमालयन वीज़ल, काला भालू, लाल लोमड़ी, लाइम तितली,** हिम तेंदुआ **तथा हिमालयन मोनाल** जैसी दुर्लभ पशु प्रजातियों का निवास स्थल है।

बायोस्फीयर रिज़र्व

- बायोस्फीयर रिज़र्व (BR) प्राकृतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य के प्रतिनिधि भागों के लिये **संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को)** द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय पदनाम है जो **स्थलीय या तटीय/ समुद्री पारिस्थितिक तंत्र या इसके संयोजन के बड़े क्षेत्र** में फैला हुआ है
- बायोस्फीयर रिज़र्व प्रकृति के संरक्षण के साथ-साथ **आर्थिक और सामाजिक विकास एवं संबंधित सांस्कृतिक मूल्यों के रखरखाव** को संतुलित करने का प्रयास करता है
- इस प्रकार बायोस्फीयर रिज़र्व लोगों और प्रकृति दोनों के लिये विशेष वातावरण हैं तथा यह इस बात का जीवंत उदाहरण हैं कि कैसे **मनुष्य एवं प्रकृति एक-दूसरे की ज़रूरतों का सम्मान करते हुए सह-अस्तित्त्व** में रह सकते हैं।

उत्तराखंड में बागवानी की पैदावार में गिरावट

चर्चा में क्यों ?

उत्तराखंड में वर्ष 2023 में, **44,882 हेक्टेयर कृषि भूमि चरम मौसम की घटनाओं के कारण नष्ट** हो गई है। घटती कृषि संभावनाओं के कारण पहाड़ी इलाकों से मैदानी इलाकों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हुआ है, जिससे बागवानी उत्पादन के लिये समर्पित क्षेत्र में कमी आने की संभावना है।

प्रमुख बिंदु:

- उत्तराखंड में बागवानी उत्पादन के क्षेत्र में कमी के कारण भी **प्रमुख फलों की पैदावार में भी वर्ष 2016-17 और 2022-23** के दौरान उल्लेखनीय बदलाव देखे गए हैं
  - अमरूद और करौंदे की खेती में वृद्धि से पता चलता है कि अब बाज़ार की मांग या स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप फलों की किस्मों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। उत्तराखंड की बागवानी फसल पर ग्लोबल वार्मिंग के महत्त्वपूर्ण प्रभाव के कारण पिछले 7 वर्षों में प्रमुख फलों जैसे उच्च गुणवत्ता वाले सेबों, नाशपाती, आड़ू, आलूबुखारा और खूबानी के उत्पादन में ज़बरदस्त गिरावट आई है
- **उत्तराखंड में भारी वर्षा, बाढ़, ओलावृष्टि और भूस्खलन** जैसी आपदाएँ लगातार आती रही हैं, जिससे कृषि भूमि तथा फसलों को भारी नुकसान पहुँचा है।

नोट :

- बढ़ते तापमान के कारण शीतकालीन फलों की खेती पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है, जिससे किसान उष्णकटिबंधीय विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। जो बदलती जलवायु परिस्थितियों के लिये बेहतर रूप से अनुकूल हैं ।

- **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI)** के अनुसार, तापमान में अल्पकालिक परिवर्तनशीलता और रुझान चिंताजनक हैं तथा मौसम के बदलावों में दीर्घकालिक रुझान एवं उपज के साथ इसके संबंध का अध्ययन करने की आवश्यकता है, विशेष रूप से, फसल/फसल प्रारूप में किसी भी प्रकार के बदलाव या फसल/फसल प्रारूप में बदलाव के साथ इसके संबंध का अध्ययन करने की आवश्यकता है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)

- इसकी स्थापना **16 जुलाई 1929 को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860** के तहत एक पंजीकृत सोसायटी के रूप में की गई थी।
- यह भारत सरकार के **कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि अनुसंधान तथा शिक्षा विभाग (DARE)** के तहत एक स्वायत्त संगठन है
- इसका **मुख्यालय नई दिल्ली** में स्थित है। देश भर में फैले 102 ICAR संस्थानों और 71 कृषि विश्वविद्यालयों के साथ यह दुनिया की सबसे बड़ी राष्ट्रीय कृषि प्रणालियों में से एक है
- यह पूरे देश में बागवानी, मत्स्य पालन और पशु विज्ञान सहित कृषि में अनुसंधान तथा शिक्षा के समन्वय, मार्गदर्शन एवं प्रबंधन के लिये **सर्वोच्च निकाय** है।

उत्तराखंड में छात्रों के लिये द्विभाषीय पुस्तकें

चर्चा में क्यों ?

देश में अपनी तरह की पहली पहल के तहत **उत्तराखंड सरकार वर्तमान शैक्षणिक सत्र से विद्यार्थियों को द्वि-भाषा विज्ञान पुस्तकें** उपलब्ध कराएगी।

प्रमुख बिंदु:

- छठी से आठवीं कक्षा के लिये विज्ञान की, जबकि उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिये भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान की तीन अलग-अलग द्विभाषीय पुस्तकें होंगी।
- राज्य शिक्षा विभाग के अनुसार, **दोहरी भाषाओं में तैयार और मुद्रित पुस्तकें शैक्षणिक वर्ष** की शुरुआत से पहले सभी राज्य संचालित स्कूलों में पहुँचा दी गई हैं। ये पुस्तकें हिंदी या अंग्रेज़ी भाषा में अलग-अलग प्रकाशित नहीं की गई हैं बल्कि प्रत्येक भाग एक ही पाठ्यक्रम का पालन करता है और दोनों भाषाओं में आसन्न पृष्ठों पर दिये गए हैं।
- **उत्तराखंड के चुनिंदा 800 सरकारी स्कूलों में जल्द ही दो-दो स्मार्ट क्लास** होंगी। सभी 1,600 स्मार्ट क्लास को तारों के ज़रिए आपस में जोड़ा जाएगा।
- स्कूलों को उच्च तकनीक वाले डिजिटल उपकरणों से सुसज्जित किया जाएगा, जिनमें बड़ी स्क्रीन, ऑनलाइन 3D शिक्षा मॉड्यूल, इंटरनेट सेवाएँ और अन्य तकनीकें एवं राजपत्र शामिल होंगे।

✦ ✦ ✦ ✦

नोट :